RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 मई 2021

बाल विज्ञान पत्रिका, मई 2021

चकमक

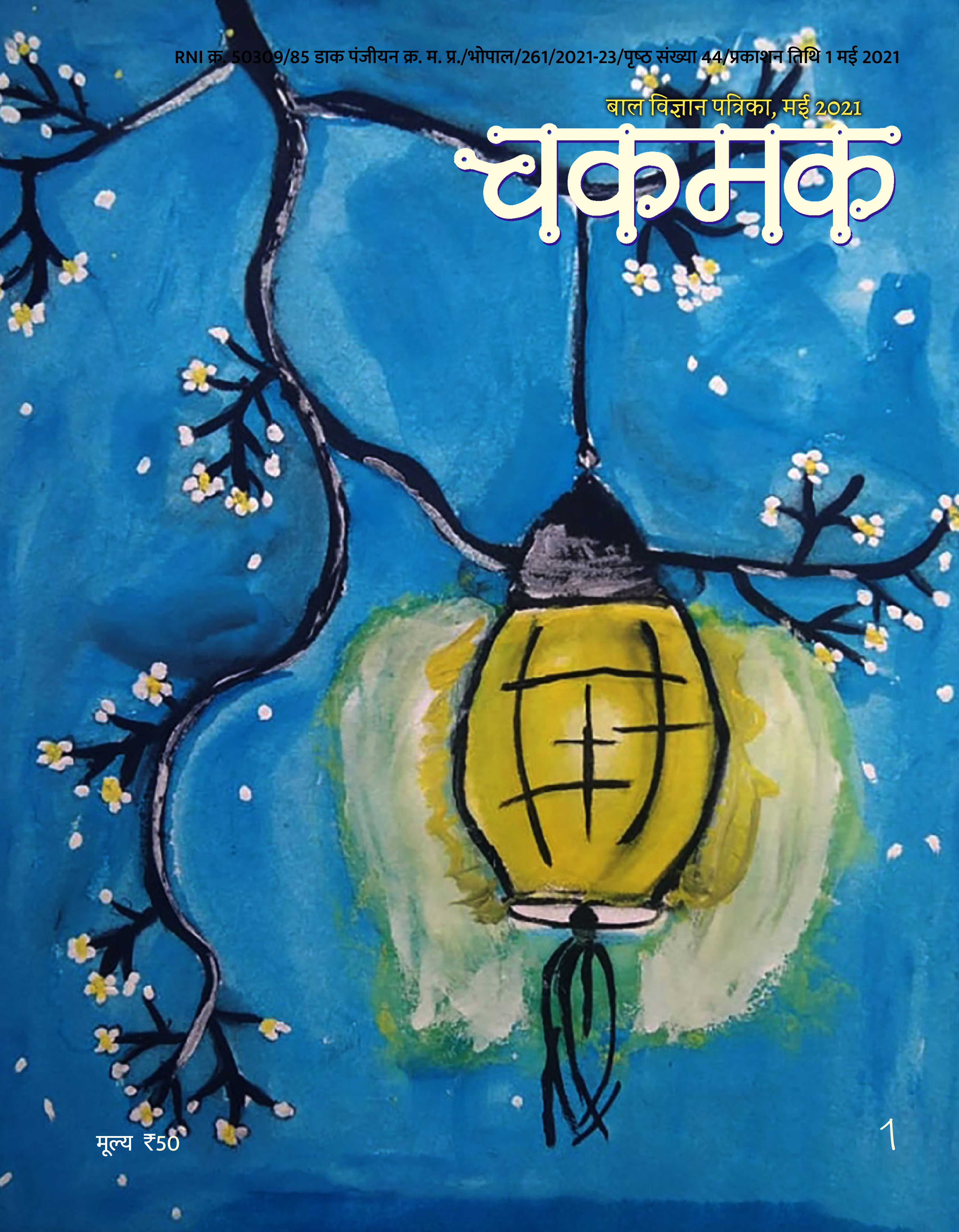

मूल्य ₹50

1

पत्तियाँ ही पत्तियाँ

यहाँ पर तरह-तरह की कुछ पत्तियाँ दी गई हैं। ये सभी पत्तियाँ तुम्हारे आसपास के पेड़-पौधों की ही हैं। इनमें से कुछ तुमने शायद तोड़ी या खाई भी होंगी। तुम इनमें से जिन-जिन पत्तियों को पहचान पाओ, उनके नाम हमें chakmak@eklavya.in पर ईमेल या फिर 9753011077 पर व्हाट्सऐप कर दो।

चुनिंदा जवाबों को चकमक की ओर से एक किताब इनाम दी जाएगी।

अंक 416 • मई 2021

चकमक

इस बार

पत्तियाँ ही पत्तियाँ – 2
इकाइयाँ – सुशील जोशी – 4
भूलभुलैया – 7
क्यों-क्यों – 8
कहानी लिखो – 12
तुम भी जानो – 14
भुतहा जामुन – बसन्त – 15
हवा चली जब मस्ती में – श्रवण कुमार सेठ – 20
अन्तर ढूँढ़ो – 21
तालाबन्दी में बचपन – एक छींक – कोमल गोस्वामी – 22
उजियारा – वीरेन्द्र दूबे – 25
अकेला जूता – शुभम नेगी – 26
बड़ों का बचपन – बचपन के कपड़े – प्रेमपाल शर्मा – 28
मेरा पन्ना – 32
माथापच्ची – 38
चित्रपहेली – 40
कालूराम शर्मा... थोड़ा और रुक जाते – सुशील जोशी – 43
शार्क और कोविड – रोहन चक्रवर्ती – 44

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

सहायक सम्पादक
मुदित श्रीवास्तव

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

वितरण
झनक राम साहू

आवरण चित्र: उमा, छठवीं, विश्वास विद्यालय, गुरुग्राम, हरयाणा

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 3 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

इकाइयाँ

सुशील जोशी
चित्र: हरमनप्रीत सिंह

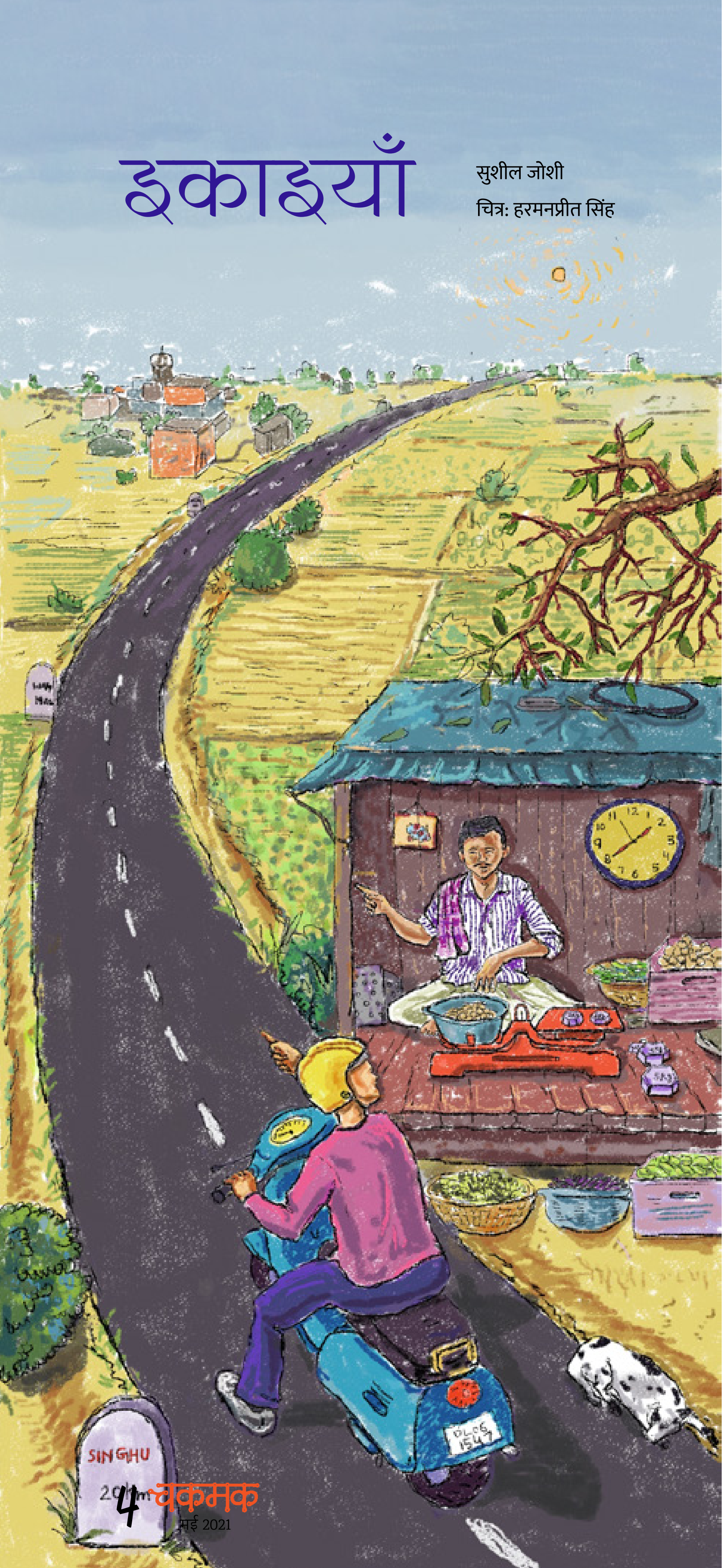

जो लोग स्कूल गए होंगे वे इकाइयों का महत्व ज़रूर जानते होंगे। कारण यह है कि परीक्षा में यदि उत्तर के साथ इकाई नहीं लिखी तो नम्बर कटते हैं। जैसे यदि लम्बाई नापने की बात है तो सिर्फ 20 लिखने से काम नहीं चलता – यह भी लिखना पड़ता है कि यह 20 सेंटीमीटर है, 20 किलोमीटर है या 20 फुट है या 20 इंच। यह तो हुई परीक्षा की बात और नम्बर कटने की बात लेकिन इकाइयों का महत्व हमें कभी-कभी भयानक हादसों के बाद स्पष्ट हो पाता है।

किलो या सेर – क्या फर्क पड़ता है?

नाप-तौल में इकाई का मतलब होता है कि हम कोई नाप (लम्बाई, वज़न वगैरह का) तय कर लेते हैं और फिर किसी भी चीज़ को इससे तुलना करके नापते हैं।

मान लो मिड डे मील योजना शुरू हुई है लेकिन सब लोग किलोग्राम वगैरह में बात नहीं करते। कुछ लोग किलोग्राम कहते हैं तो कुछ लोग सेर कहते हैं। तय हुआ कि किसी स्कूल में बच्चों की संख्या के हिसाब से महीने भर में 150 किलोग्राम आटे की ज़रूरत पड़ेगी। जो व्यक्ति खरीदी करने गया उसने 150 सेर आटा खरीदा। क्या इतना आटा महीने भर के लिए पूरा पड़ जाएगा?

खैर यह इतनी बड़ी समस्या नहीं होगी क्योंकि थोड़ा आटा कम पड़ेगा तो किसी को बाज़ार भेजकर और आटा मँगवा लेंगे। लेकिन कुछ ऐसी स्थितियाँ भी हो सकती हैं जहाँ बाज़ार जाने का मौका नहीं मिलेगा। पर उन पर बात करने से पहले थोड़ा इकाइयों के इतिहास को समझ लेते हैं।

हम सब एक तो इकाइयाँ क्यों अनेक?

दुनिया भर में सदियों से लोग नाप-तौल करते आए हैं। और अलग-अलग जगहों पर लम्बाई, वज़न, समय वगैरह की अलग-अलग इकाइयाँ प्रचलन में आईं। हमारे देश में लम्बाई के लिए सूत, बित्ता, हाथ, बांस, पुरुष, कोस जैसी इकाइयों का उपयोग होता था। वज़न के लिए रत्ती, तोला, माशा, सेर, धड़ी, मन जैसी इकाइयाँ थीं और समय को घड़ी, पल वगैरह के रूप में नापा जाता था। कुछ अन्य स्थानों पर गज, मील, स्टेडियम जैसी इकाइयाँ थीं। लेकिन जब लोग देश-विदेश में व्यापार करने लगे तो एक स्थान की इकाइयों को दूसरे स्थान की इकाइयों में बदलने की ज़रूरत पड़ी।

दुनिया और आगे बढ़ी और लोगों को लगा कि पूरी दुनिया में एक जैसी इकाइयाँ होनी चाहिए और हरेक इकाई की परिभाषा भी एक जैसी होनी चाहिए। इसके साथ ही मेट्रिक प्रणाली प्रचलित हुई। उदाहरण के लिए पेरिस में मीटर और किलोग्राम के मानक बनाकर रखे गए। सबको पता है कि ये मानक नाप प्लेटिनम के बने थे। आगे चलकर एक मानक सेकंड जोड़ा गया। बाद में एम्पीयर (विद्युत की इकाई), कैल्विन (तापमान), कैंडेला (दीप्ति) तथा अन्त में मोल (पदार्थ की मात्रा) जैसे इकाइयाँ जोड़ी गईं।

इस नई प्रणाली में लम्बाई सेंटीमीटर में, द्रव्यमान ग्राम में तथा समय सेकंड में नापा और बताया जाता है – इसे सीजीएस प्रणाली कहते हैं। बाद में तय हुआ कि लम्बाई की इकाई मीटर, द्रव्यमान की किलोग्राम और समय की इकाई सेकंड होगी। इसे एमकेएस प्रणाली कहा गया। वैज्ञानिकों की अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने इन इकाइयों को मान्यता दी और यह कहा गया कि सारी दुनिया में इनका ही उपयोग किया जाएगा। वैसे समय के साथ इन इकाइयों की परिभाषा बदलती रही है लेकिन अभी उसकी बात नहीं करते।

इकाइयों के कन्फ्यूज़न से गड़बड़

लेकिन अड़ियल तो अड़ियल ही होते हैं। कुछ देशों ने कह दिया कि वे फुट-पाउंड-सेकंड (एफपीएस) प्रणाली का इस्तेमाल करते रहेंगे। एफपीएस प्रणाली में लम्बाई को फुट में, द्रव्यमान को पाउंड में और समय को सेकंड में नापा और बताया जाता है। वैसे एमकेएस, सीजीएस और एफपीएस को एक-दूसरे में बदलना आसान है पर झंझट तो है ही। एक जगह के लोग दूरियों को किलोमीटर में बताएँ और दूसरी जगह के लोग मील में बताएँ तो हर बार बात को समझने के लिए इकाइयों को बदलना पड़ेगा। और कभी बदलना भूल गए तो अंजाम खतरनाक हो सकता है। ज़रा देखते हैं।

उड़ते हवाई जहाज़ का ईंधन खलास

जैसा कि मैंने पहले ही बताया था दुनिया भर में मेट्रिक प्रणाली लागू करने की बात तो हुई लेकिन कुछ देश पुरानी प्रणाली पर ही अड़े रहे। कनाडा एक ऐसा

ही देश था। यहाँ मेट्रिक प्रणाली 1970 में लागू की गई और हर जगह इसे लागू करते-करते पूरे 15 साल लग गए। इस बदलाव को मेट्रिक्यूलेशन कहा जाता था। यहाँ की हवाई कम्पनी को मेट्रिक्यूलेशन में सबसे ज़्यादा टाइम लगा था। जब किसी हवाई जहाज़ को उड़ान भरनी होती तो यह तय करना होता था कि उसमें कितना ईंधन भरा जाए। लीटर के मान को वज़न में बदलना पड़ता था। तो एक हवाई जहाज़ में ईंधन भरा गया।

जिस व्यक्ति ने लीटर को वज़न में बदला था उसने किलोग्राम में बताया था कि कितना ईंधन भरना है। जिस व्यक्ति ने ईंधन भरा उसने मान लिया कि आँकड़ा पाउंड में है। तो उसने पाउंड के हिसाब से ईंधन भर दिया। यह बता दूँ कि एक किलोग्राम करीब-करीब 2 पाउंड के बराबर होता है। तो किलोग्राम की बजाय पाउंड में ईंधन भरकर हवाई जहाज़ उड़ चला। भरना था 22000 किलोग्राम और भर दिया 22000 पाउंड। यानी हवाई जहाज़ में ज़रूरत से आधा ही ईंधन था। अब जब बीच रास्ते में पता चला तो उस समय वह हवाई जहाज़ ज़मीन से करीब साढ़े बारह किलोमीटर की ऊँचाई पर उड़ रहा था। वहाँ कोई पेट्रोल पम्प तो था नहीं। बस खुशकिस्मती की बात थी कि उस हवाई जहाज़ के पायलट बहुत अनुभवी थे और उन्होंने बगैर ईंधन के ग्लाइड करते हुए हवाई जहाज़ को सुरक्षित उतार लिया, कोई नुकसान नहीं हुआ।

मंगलयान स्वाहा!

लेकिन मंगल पर जाने वाला अन्तरिक्ष यान इतना खुशकिस्मत नहीं रहा। अमेरिका में भी फुट-पाउंड-सेकंड प्रणाली चलती रही। वैसे 1975 में वहाँ भी एमकेएस प्रणाली लागू की गई लेकिन लोगों को पुरानी प्रणाली का उपयोग करने की छूट दी गई थी। हाँ यह ज़रूर था कि सारे सरकारी कामकाज में इकाई परिवर्तन करके ही आगे बढ़ना होता था। लेकिन जब छूट थी तो दोनों प्रणालियाँ चलती रहीं।

1999 में अमेरिका की संस्था नासा ने मंगल पर अपना यान भेजा था। बाकी सारा काम (यानी यान का डिज़ाइन वगैरह बनाना) तो नासा ने किया था लेकिन यान को वास्तव में बनाने का काम एक प्रायवेट कम्पनी लॉकहीड ने किया था। यान की रफ्तार कब कितनी होनी चाहिए, कौन-से इंजन कब चालू करने होंगे वगैरह सब लॉकहीड ने तैयार किया था।

कई महीनों की यात्रा करके जब यह अन्तरिक्ष यान मंगल के नज़दीक पहुँचा तो कुछ इंजन चालू करके इसकी गति को धीमा करना था ताकि यह मंगल ग्रह की कक्षा में चक्कर लगाने लगे। ये इंजन कितना बल लगाएँगे, इसकी गणना कर ली गई थी। किन्तु जिसने गणना की थी उसने पाउंड की इकाई में बल की गणना की थी जबकि इंजन को चलाने वाले सॉफ्टवेयर में दूसरी इकाई (न्यूटन) का उपयोग किया गया था। वैसे यह नियम था कि अन्त में सारी इकाइयों को बदल दिया जाएगा लेकिन कोई चूक हो गई। हुआ यह कि जितना बल लगाने की ज़रूरत थी उतना वास्तव में लगाया नहीं गया और यान बहुत तेज़ी-से मंगल के वायुमण्डल में घुसा और स्वाहा हो गया।

इकाइयों के कारण ऐसी और भी दुर्घटनाएँ-समस्याएँ हुई हैं। उनकी बात करेंगे तो करते ही रह जाएँगे। बाकी काम भी तो हैं।

क्यों क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का
हमारा सवाल था—

यदि तुम स्कूल में पढ़ाए जाने वाले विषयों में कोई एक नया विषय जोड़ सकते और एक पुराना विषय हटा सकते तो वो कौन-से विषय होंगे, और क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

अगली बार के लिए सवाल है—

सोचो कि तुम ज़िन्दगी में कुछ भी बन सकते हो! किसी भी तरह की कोई बाधा नहीं है। तो तुम क्या बनना चाहोगे, और क्यों?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें
chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो।
चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो।
हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

मैं गणित को हटाना चाहूँगी क्योंकि उसमें बहुत दिमाग लगाना पड़ता है। बहुत उल्टा-पुल्टा रहता है। मुझे गणित में जल्दी समझ नहीं आता। देर से ही सही लेकिन मैं समझती हूँ। मैं इसकी जगह डाँस को लाना चाहूँगी क्योंकि डाँस में ऐसा लगता है कि मैं आसमान को छू रही हूँ।

सृष्टि झा, पाँचवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

मैं संस्कृत को छोड़ दूँगी। यह न तो बोली जाती है, न ठीक से पढ़ी जाती है। इसका अनुवाद करना तो और भी कठिन है। इसके बदले मैं कला लेना पसन्द करूँगी। अपने मन के रंग भर सकूँगी।

अंजलि नेगी, आठवीं, राजकीय इंटर कॉलेज, केवर्स,पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

चित्र: पुष्पा, तीसरी, अपना स्कूल, मुरारी सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

मुझे गणित बहुत पसन्द है क्योंकि गणित में पहाड़े होते हैं। और जोड़-घटाना भी होता है। मुझे संस्कृत नहीं पसन्द। क्योंकि इसकी ज़रूरत नहीं है। और समझ में भी नहीं आती है। अगर नई-नई जगह देखने का विषय जोड़ें तो कितना अच्छा होगा और हमको मज़ा भी आएगा।

कुमकुम, छठवीं, अपना तालीम घर, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

मैं साइंस को हटाना चाहूँगा क्योंकि साइंस में बहुत सारी चीज़ें याद करनी पड़ती हैं। और साइंस में मज़ा भी नहीं आता है। मैं जो विषय जोड़ना चाहता हूँ, वह गाना है। जब मैं गाता हूँ तो सब लोग खुश हो जाते हैं।

प्रत्युष हालदार, चौथी, एसडीएमसी स्कूल, हौज खास, दिल्ली

हम हिन्दी विषय को जोड़ेंगे और अँग्रेज़ी को हटा देंगे क्योंकि हिन्दी पढ़ने में सरल होती है।

रोशन, दूसरी, अपना स्कूल, सम्राट सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

मैं फोटोग्राफी का विषय जोड़ना चाहूँगी। क्योंकि यह हमारे कौशल को निखारकर हमें आत्मनिर्भर बनने में मदद करता है।

आज्ञा, सातवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

मैं कक्षा 1 में पढ़ती हूँ। पूरे साल स्कूल बन्द रहा। ऑनलाइन पढ़ाई चलती रही। मुझे सबसे ज़्यादा मुश्किल गणित की पढ़ाई लगने लगी है। क्योंकि ऑनलाइन वर्क में ढेर सारे सवाल मिल जाते हैं। जिन्हें हल करना बहुत बोर लगता है।

मेरे मामा ने मुझे एक पियानो दिया है। कितना मज़ा आए कि स्कूल में एक विषय गणित हटा दिया जाए और उसकी जगह म्यूज़िक कर दिया जाए। मुझे पियानो बजाने का मन करता है। पर पापा कहते हैं कि अपने शहर में इसकी कोई ट्यूशन नहीं मिल पाएगी।

द्युति, पहली, किड जोन प्री स्कूल, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

चित्र: द्युति, पहली, किड जोन प्री स्कूल, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

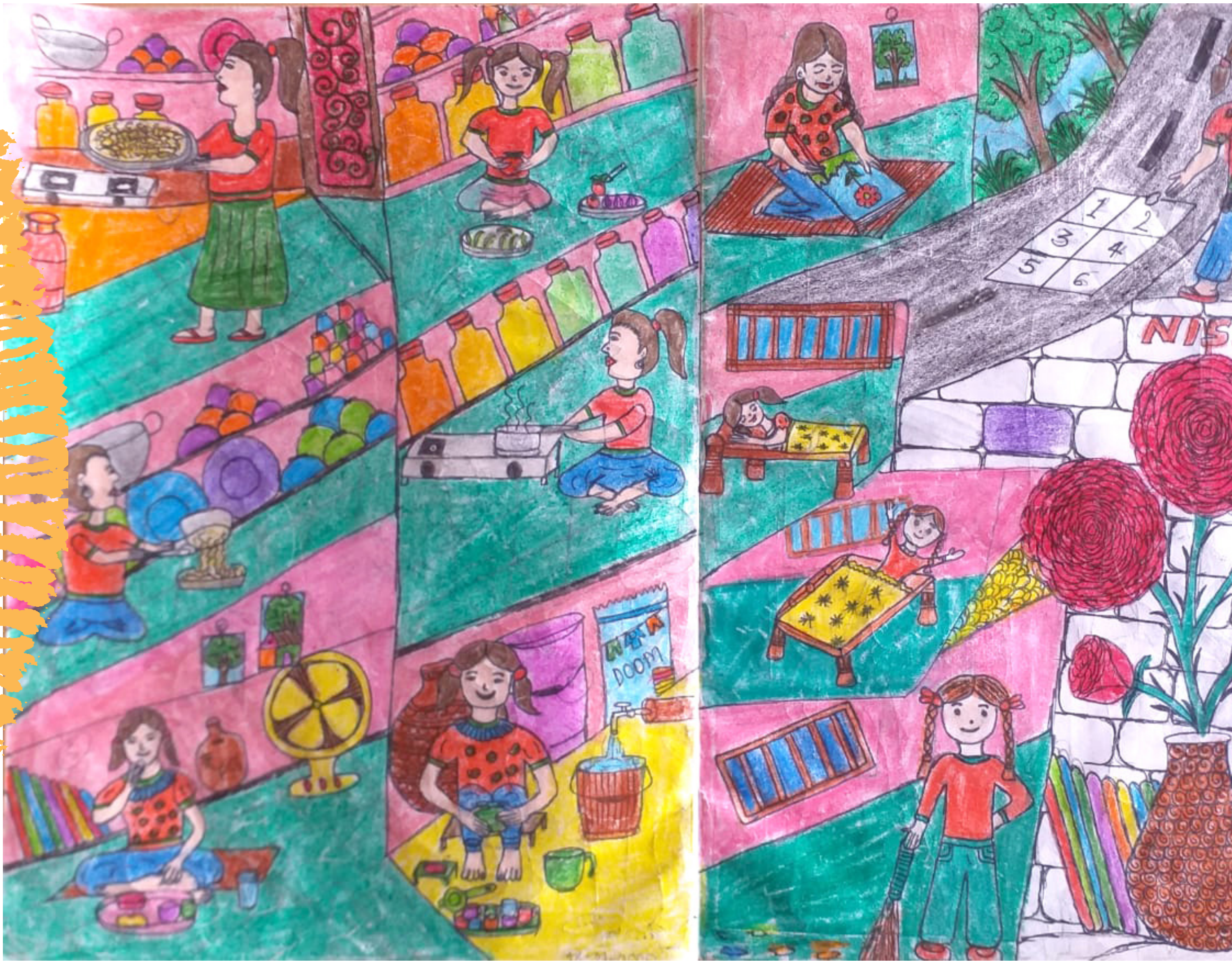

चित्र: निशा, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, टोंक, राजस्थान

मुझे इतिहास पसन्द नहीं क्योंकि जो घटना घटित हो गई हो उसे याद करके क्या फायदा। इसकी जगह मैं आर्ट व क्राफ्ट का विषय जोड़ना चाहूँगी। क्योंकि मुझे नई-नई चीज़ें बनाना और घर सजाना अच्छा लगता है।

भूमि, नौवीं, दीपालया कम्युनिटी लाइब्रेरी, गोलाकुआँ, दिल्ली

मैं संस्कृत को हटाता क्योंकि मुझे उसमें कुछ समझ में नहीं आता। हालाँकि मैं अच्छे अंक ले आता था परीक्षा में। पर कुछ समझ में भी आना ज़रूरी होता है। मैं आई.टी. यानी इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी को जोड़ता क्योंकि मैं इसे पढ़ना चाहता हूँ पर यह मेरे विद्यालय में नहीं है।

स्वर्णदीप बामनिया, दसवीं, देवास, मध्य प्रदेश

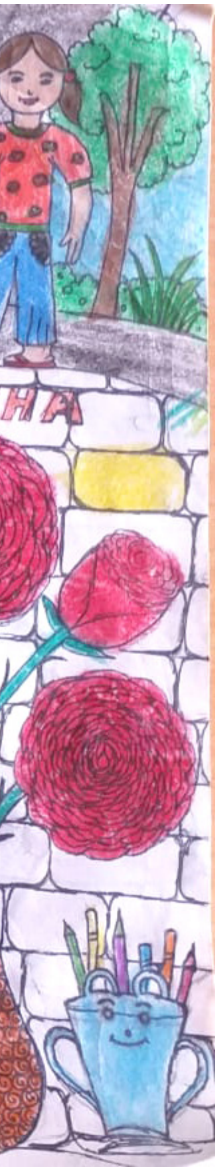

मैं गृह-विज्ञान हटाना चाहूँगी क्योंकि यह घर के कामों के बारे में होता है। जो हम लड़कियाँ रोज़ करती हैं। इसलिए इसकी ज़रूरत नहीं है। इसकी जगह मैं कम्प्यूटर विषय जोड़ना चाहूँगी क्योंकि वर्तमान समय में सब कुछ कम्प्यूटर से जुड़ा होता है। और आगे हमें कम्प्यूटर के ज्ञान की बहुत ज़रूरत पड़ेगी।

प्रभा, सातवीं, अपना स्कूल, तातियागंज सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

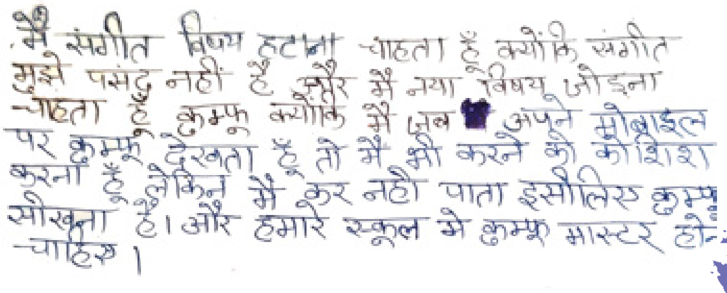
मैं संगीत विषय हटाना चाहता हूँ क्योंकि संगीत मुझे पसंद नहीं है और मैं नया विषय जोड़ना चाहता हूँ कम्पू क्योंकि मैं जब अपने मोबाइल पर कम्पू देखता हूँ तो मैं भी करने की कोशिश करना हूँ लेकिन मैं कर नहीं पाता इसीलिए कम्पू सीखना है। और हमारे स्कूल मे कम्पू मास्टर होने चाहिए।

चित्र: रामनरे, चौथी, अपना स्कूल, मुरारी सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

मैं अपना पुराना विषय विज्ञान छोड़ दूँगा। एक तो यह विषय अँग्रेज़ी में हो गया है। अँग्रेज़ी में विज्ञान समझना कठिन है। दूसरी बात विज्ञान पढ़ने और समझने के लिए बहुत खर्चा करना पड़ता है। इतने पैसे मेरे पास नहीं हैं। इसलिए मैं इसे हटा दूँगा। इसके बदले में कुछ और विषय ले लूँगा।

सुमित रमोला, आठवीं, राजकीय इंटर कॉलेज,केवर्स,पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

मैं इंग्लिश को हटाना चाहता हूँ क्योंकि मुझे इंग्लिश में कोई भी वर्ड याद नहीं होते। और मैं इंग्लिश की हिन्दी भी नहीं बना पाता। इसकी जगह मैं कम्प्यूटर का विषय जोड़ना चाहता हूँ क्योंकि उसका प्रैक्टिकल करने में मुझे मज़ा आता है।

शुभम पाल, सातवीं, दीपालया कम्युनिटी लाइब्रेरी, गोलाकुआँ, दिल्ली

चित्र: सानिया, चौथी, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

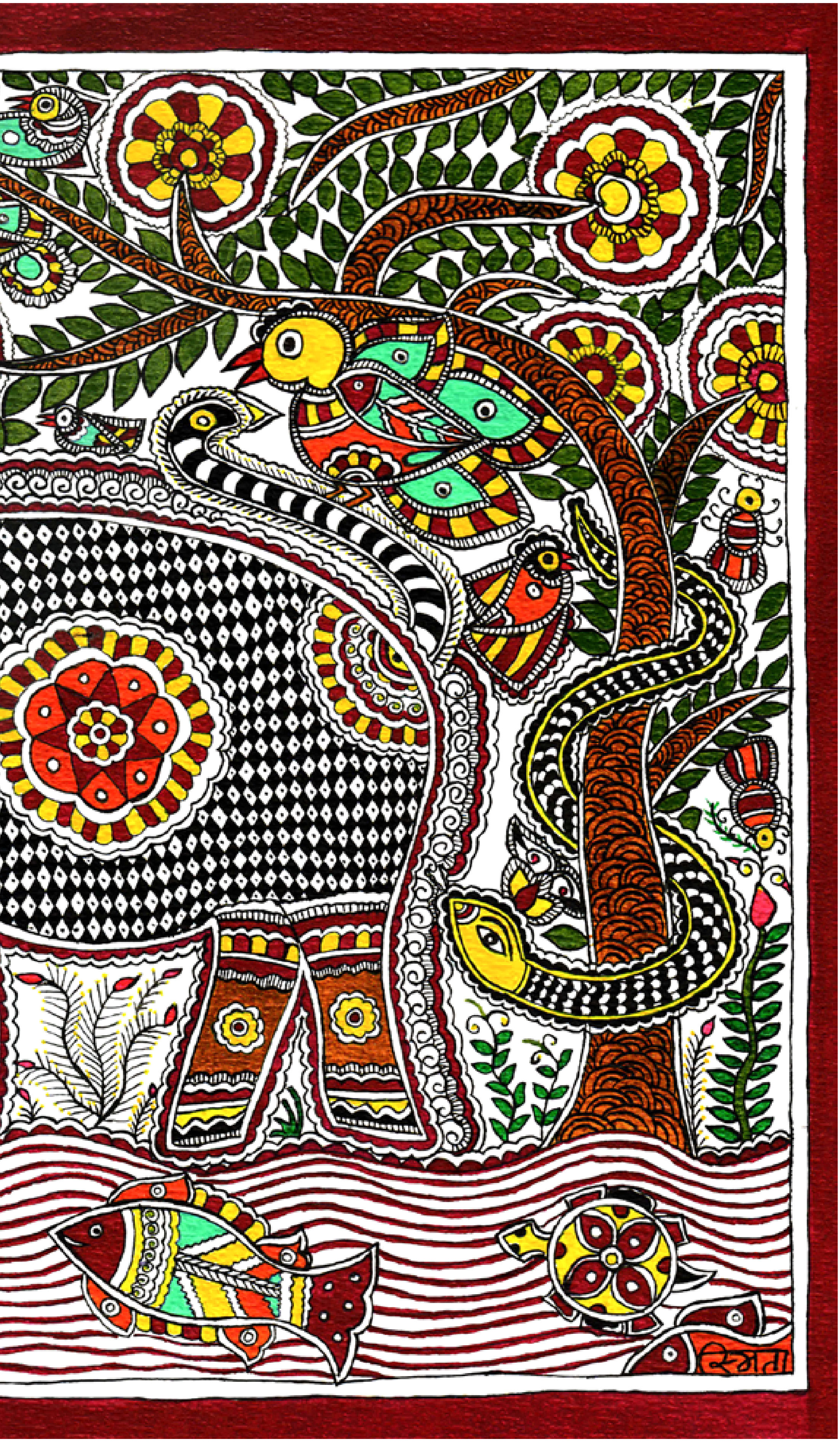

कहानी लिखो

चित्र: स्मिता

कहानी पढ़ो तो उसके चित्र दिमाग में बनने लगते हैं। और चित्र देखो तो उसकी कहानी बनने लगती है।
इस चित्र को गौर से देखो। कितना कुछ है इसमें – जंगल, हाथी, चिड़िया, नदिया, पेड़, कछुआ, मछली, चींटी...। एक ही चित्र से अलग-अलग किरदारों को मिलाकर कितनी सारी कहानियाँ तैयार की जा सकती हैं।

अगले अंक में तुम्हें इस चित्र पर आधारित कुछ कहानियाँ पढ़ने को मिलेंगी। उनमें से एक तुम्हारी लिखी भी हो सकती है। तो एक छोटी (200-500 शब्दों की) कहानी लिखकर हमें chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर दो...

तुम भी जानो

कमाल की पॉटी

वॉमबैट, ऑस्ट्रेलिया में पाया जाने वाला एक जीव है। हाल ही में ये अपनी पॉटी के लिए मशहूर हुए हैं। इनकी पॉटी घनाकार (क्यूब) होती है। यानी किसी पासे के आकार जैसी। घनाकार पॉटी करने वाला यह दुनिया का इकलौता जीव है। वॉमबैट चट्टानों पर चढ़ते हैं और अपने इलाके को पॉटी से चिह्नित करते हैं। विशेषज्ञों ने बताया है कि ऐसी पॉटी नमी की कमी की वजह से होती है – चिड़ियाघर में रहने वाले वॉमबैट, जो पानी की कमी महसूस नहीं करते हैं, उनकी पॉटी कम घनाकार होती है।

रेडियो पर स्कूल

1937 में अमेरिका पोलियो से बुरी तरह प्रभावित था। वैक्सीन बन जाने तक बच्चों को घरों से बाहर न निकलने के निर्देश थे। संक्रमण न फैले इसलिए खेल के मैदान, पार्क, पूल और स्कूल सहित सभी सार्वजनिक जगहें बच्चों के लिए बन्द कर दी गई थीं। इसी दौरान दुनिया का पहला 'रेडियो स्कूल' शिकागो शहर में शुरू हुआ। तीसरी से लेकर आठवीं तक के लगभग तीन लाख पन्द्रह हज़ार बच्चों को रेडियो के ज़रिए घर में ही पढ़ाया गया। तो जब लैपटॉप या इंटरनेट नहीं थे तब भी ऑनलाइन पढ़ाई होती थी।

भुतहा जामुन

बसन्त

चित्र: नीलेश गहलोत

हमारे गाँव में जामुन का एक पेड़ था। उसके जामुन इतने मीठे थे कि दाँत लगाओ तो मानो मुँह में शर्बत घुल जाए। पर एक अजीब बात थी। उस जामुन में कोई बीज नहीं होता था। लोग कहते थे कि उस पेड़ पर एक भूत रहता था। उसे जामुन के बीज खास पसन्द थे। वो इतना चुपके-चुपके बीज खाता कि पेड़ को भी इसकी भनक नहीं लगती थी। हम सब खुश होते– इतने बड़े-बड़े जामुन और उनमें कोई बीज न हो। इससे बढ़िया और क्या हो सकता है।

मगर एक मुश्किल थी। लोग कहते थे कि अगर कोई जामुन बीज वाला निकल जाए तो भूत उस बीज को खोजता-खोजता जामुन खाने वाले के ऊपर सवार हो जाता था। फिर उस भूत को भगाना बड़ी मुश्किल का काम होता था। ओझा-गुनी आते, मंत्र पढ़ते और भूत चढ़े हुए इन्सान की जमकर पिटाई करते। बीच-बीच में भूत से पूछते, “तू इस आदमी को छोड़कर भागता है कि नहीं?” भूत बोलता, “नहीं।” फिर धुआँधार पिटाई होती। काफी पिटाई के बाद ही भूत समझौते के लिए तैयार होता। उसकी दो शर्तें होतीं – पहली ये कि भूत को गाँव के दक्षिणी कोने पर माँस और शराब का चढ़ावा दिया जाएगा। और दूसरी ये कि कोई आदमी दोबारा बीज वाला जामुन नहीं खाएगा। पहली शर्त मानना तो आसान था लेकिन दूसरी शर्त का क्या किया जाए? बिना जामुन खाए ये कैसे पता चलेगा कि उसके अन्दर बीज है या नहीं। अब तुम ही बताओ भूत के डर से जामुन खाना तो नहीं छोड़ा जा सकता ना।

गाँव के लोग छुप-छुपकर फिर उस जामुन को खाते। सोचते कि भूत उनको नहीं देख रहा। लेकिन भूत किसी पहरेदार की तरह सब पर नज़र रखता। लोग जब उस जामुन के पेड़ के पास से गुज़रते तो मानो जामुन उनको ललचा रहा होता। इसके पहले कि वे कुछ समझ पाते वे पेड़ के ऊपर चढ़ चुके होते। लेकिन देखते-देखते जामुन की डाल कुछ ऊपर की तरफ उठ जाती थी। मानो पेड़ कह रहा हो, “थोड़ा और ऊपर..., थोड़ा और ऊपर।” जब वे ऊपर की डाल पर सरकते तो अचानक

से कड़-कड़ की आवाज़ होती और जामुन तोड़ने वाला पेड़ की डाल के साथ ज़मीन पर पटका जाता। अबकी बार ओझा-गुनी नहीं, बल्कि डॉक्टर के पास जाना पड़ता। पट्टी में लिपटा टूटा हाथ या टूटा पैर देखकर सब लोग समझ जाते कि ये किसकी कारस्तानी है। फिर कई दिनों तक कोई उस पेड़ के पास नहीं फटकता। लेकिन उतना बढ़िया जामुन मिलेगा कहाँ? कुछ दिनों के बाद लोग चुपके-चुपके फिर उस जामुन के पास पहुँच जाते। और भूत की गाँव वालों के साथ लड़ाई फिर शुरू हो जाती। अब तुम ही बताओ इसमें गलती किसकी है – गाँव वालों की या भूत की?

मेरे गाँव में जितने लोग नहीं थे, उनसे ज़्यादा भूत थे। लेकिन वे भूत अपने काम से काम रखते थे और तभी कुछ करते थे जब उन्हें कोई परेशान करता था। जैसे कि एक भूत होता था – डूबा'। अगर कोई बच्चा गाँव के पोखर में ज़्यादा गहरे पानी में चला जाता तो डूबा उसकी टाँग खींचकर उसे पानी में डुबोने की कोशिश करता। कई बच्चे बड़ी मुश्किल से पैर छुड़ाकर, जान बचाकर भागे थे। लेकिन डूबा पानी के बाहर नहीं आता था। अब कोई पानी में जाकर उसे परेशान करे तो इसमें भला भूत की क्या गलती?

एक और भूत था – 'धोकरहा'। वो किसी को डराता नहीं था। बड़ा भला भूत था वो। जिस पर वो खुश हो जाता उसका अनाज का गोदाम रातों-रात भर जाता। अब ये बात और है कि उसी रात में किसी दूसरे का गोदाम खाली भी हो जाता था। धोकरहा सारी-सारी रात अनाज ढोकर एक गोदाम से दूसरे गोदाम ले जाता था। उधर श्मशान वाले भूत बड़े खतरनाक थे। एक सिरकट्टा भूत जब देखो तब श्मशान में दौड़ लगाता रहता। वहीं एक और भूत रहता था। उसका सिर तो था लेकिन उसके मुँह से आग के शोले निकलते रहते थे। ऐसा लगता था कि उसने सिरकट्टे के साथ रेस लगा रखी हो। इन दो भूतों की भागमभाग में सोचो बेचारे गाँव वालों पर क्या गुज़रती होगी? मौके-बेमौके लोगों को वहाँ से गुज़रना ही पड़ता। डर के मारे लोगों के दिल मानो छलाँग लगाकर मुँह से बाहर आने को होते। उस भूत की काट निकाली मुंजा बुढ़िया ने। पण्डित जी ने कहा था कि हनुमान चालीसा पढ़ने से भूत भाग जाते हैं। मुश्किल ये थी कि उतने सारे दोहे कैसे रटे जाएँ जबकि ज़्यादातर लोग पढ़ना-लिखना ही नहीं जानते थे। मुंजा मासी

जब भी उस रास्ते से गुज़रतीं तो जपती जातीं 'जय हनुमान चालीसा, जय हनुमान चालीसा'। अब हनुमान जी का प्रताप देखिए मुंजा मासी को कभी भी भूत ने परेशान नहीं किया, बल्कि उन्हें तो कोई भूत दिखाई तक नहीं दिया।

और भी कई भूत गाँव के अलग-अलग पेड़ों पर, झाड़ियों में, कुँए में और यहाँ तक की छतों पर भी देखे गए थे। उनमें से चार भूत खासकर खतरनाक थे – ब्रह्मपिशाच बड़ा शक्तिशाली भूत था। एक बार जिस पर सवार हो जाता उसे छोड़ने का नाम नहीं लेता था। ओझा-गुनी सब उससे डरते थे। कई बार तो वो भूत भगाने आए ओझा-गुनी को ही दबोच लेता। अब पता चला कि एक की जगह दो लोगों पर भूत आ गया। जिससे उम्मीद थी कि

भूत भगाएगा वही भूत का शिकार हो गया। फिर दूर के गाँव से एक बड़े ओझा को बुलाना पड़ता था। भूत भगाने में कई-कई दिन लग जाते थे।

ब्रह्मपिशाच की टक्कर के दो और भूत थे – तेलिया मसान और जिन्न। तेलिया मसान था तो बड़ा ही खतरनाक, लेकिन उसका इस्तेमाल ओझा लोग ब्रह्मपिशाच से टक्कर लेने के लिए करते थे। तेलिया मसान कुछ खतरनाक दिखने वाली हड्डियों में छुपा रहता था जिन्हें ओझा अपने साथ रखते थे। जिन्न भूत अगर किसी से खुश हो जाता तो उसे मालामाल कर देता लेकिन अगर वो खफा हो गया तो कोई ओझा-गुनी भी उससे नहीं बचा सकता।

एक भूतनी भी युवाओं को काफी परेशान करती थी – चुड़ैल। सफेद कपड़े पहने चाँदनी रात में वो अगर दिख गई तो जवानों की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती थी। गाँव के बड़े-बूढ़े अक्सर कहते थे, “चुड़ैल से बचो, दूसरे भूतों की काट है। लेकिन चुड़ैल के जाल में अगर फँसे तो जवानी से हाथ धोना पड़ेगा।”

उन दिनों कुछ और भूतों का भी ज़ोर बढ़ रहा था। उनके मुँह से खून का फव्वारा बहता रहता। उनकी नाक से भर्राती-सी आवाज़ निकलती रहती। ‘लिंच-लिंच, मरा-मरा’। लोगों को देखकर उनको पकड़ने की बजाय वे तेज़ी-से भागते। ऐसे डरपोक भूत से भला कौन डरे। वो भूत ही कैसा जो ‘मरा-मरा’ कहता हो? मरा हुआ इन्सान दुबारा कैसे मर सकता है? इस बात का रहस्य शायद उस भूत को ही मालूम हो। लेकिन कोई उनसे यह सवाल पूछे कैसे, उनको पकड़ना मुश्किल है।

मेरे पिताजी गाँव के मुखिया थे। पढ़े-लिखे थे और कहते थे कि भूत जैसी कोई चीज़ नहीं होती। कितने लोगों ने बताया कि उन्होंने भूत देखा है। बल्कि बुलाकी चाचा से तो भूत ने खैनी भी माँगी थी। लेकिन पिताजी कहते यह सब वहम है। मेरी उम्र तब लगभग बारह साल रही होगी। मुझे अन्दर-अन्दर से तो भूत का डर लगता था लेकिन मुझे पिताजी पर बड़ा भरोसा था।

एक दिन चौपाल में भूतों पर बात छिड़ गई। ननकू चाचा ने तो यहाँ तक कहा कि एक दिन भूत ने उन्हें कुश्ती लड़ने के लिए ललकारा था। भूत ने ननकू चाचा को धोबिया पाट दिया। चाचा का तो मानो सर धड़ से अलग हो गया। लेकिन चाचा डरे नहीं। उन्होंने मिट्टी पकड़ ली। उसके बाद घण्टों लड़ाई चली। भूत उनको चित्त न कर सका। फिर सुबह हो गई तो भूत गायब हो गया।

“अब बताओ जीत तो मेरी ही हुई ना, धोबिया पाट देने के बाद भी भूत मुझे चित्त नहीं कर पाया और फिर भाग खड़ा हुआ।”

मैं अड़ गया। “आप सब झूठमूठ की कहानियाँ बनाकर लोगों को डराते हो। भूत होता ही नहीं है।”

सारे लोग हँस पड़े, “छुटकू भैया, अभी तुम्हें बहुत सीखना-जानना है। सब बातें किताबों में नहीं होती हैं।”

“देखो मैं भगवान को नहीं मानता लेकिन भूत को मानता हूँ। जब भी मैं श्मशान से गुज़रता हूँ तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मुझे पता चल जाता है कि आसपास में कोई है। मुझे किसी जगह यह एहसास नहीं हुआ कि वहाँ भगवान हैं। लेकिन भूत का तो मुझे पता चल जाता है।”

मैं और ज़्यादा तैश में आ गया, “आप लोग मुझे डराने के लिए ऐसी बातें कर रहे हैं। भूत-वूत कुछ नहीं होता।”

“ऐसी बात है तो तुम क्या बगीचे वाले जामुन के पेड़ का पत्ता तोड़कर ला सकते हो?” ननकू चाचा बोल पड़े।

“बिलकुल ला सकता हूँ। अभी जाता हूँ।”

मैं निकलने लगा तो चाचा लोग घबराए। उन्होंने मुझे रोकने की कोशिश की। कुछ भूत के डर से और कुछ साँप और सियार के डर से मुझे रात के अँधेरे में जाने देना नहीं चाहते थे। लेकिन मैं दिखा देना चाहता था कि मुझे किसी चीज़ का डर नहीं।

मैं बाहर निकल गया। रात के लगभग आठ बज चुके थे। चाँदनी रात थी। हर पेड़ की छाया अन्धकार की गहराई को और ज़्यादा रहस्यमय बना रही थी। ऐसा लगा कि पेड़ों के झुरमुट से हज़ारों आँखें मुझे निहार रही थीं। हवा से अगर कोई पत्ता हिलता तो लगता कि हवा की चादर हमारे चारों ओर तैर रही है। किसी पेड़ में थोड़ी खरखराहट हुई तो लगा कि नगाड़ा बज उठा। मानो हज़ारों प्रेत छायाएँ मुझे दबोचने के लिए एक साथ कूद पड़ी हों। अचानक एक भाकुड़ किरकिचाता हुआ पंख फड़फड़ाकर उड़ चला। उधर पास ही कहीं सियार भी हुँआ-हुँआ करने लगे। तुम जानते ही होगे कि इन्सान को जो चीज़ नहीं दिखती उसे ये जानवर देख लेते हैं। अब तो मानो अक्टूबर की मीठी ठण्ड जनवरी की कँपकँपी में बदल गई हो। अब मैंने 'जय हनुमान चालीसा, जय हनुमान चालीसा' की रट लगानी शुरू कर दी। लेकिन मैं हिम्मत करके बगीचे की तरफ बढ़ता गया, जामुन के पेड़ से पाँच पत्ते तोड़े। कोई भूत-वूत नहीं आया। उसके बाद पूरी तेज़ी-से दौड़ता हुआ वापिस लौटा। बार-बार महसूस होता कि मुझे पीछे से कोई खदेड़ रहा है।

जब चौपाल पर वापिस पहुँचा तो चाचा लोग स्तब्ध रह गए। खदेरन चाचा बोले कि मैं पास के किसी जामुन के पेड़ का पत्ता तोड़ लाया हूँ। लेकिन ननकू चाचा ने पत्तों को गौर-से देखा और कहा कि ऐसे पत्ते सिर्फ भुतहे जामुन में ही होते हैं। तब तक पिताजी आ गए। जब उन्होंने यह कहानी सुनी तो रात के अँधेरे में बच्चे को बगीचे भेजने पर वे चाचा लोगों पर थोड़े नाखुश हुए। बोले " "कोई लाल-लाल आँखों वाला, काला-काला, बड़ी-बड़ी मूँछ वाला, हाथी के दाँत वाला भूत नहीं मिला? अब तो आप सब इस अन्धविश्वास से निकलो।" फिर उन्होंने मुझे शाबाशी दी। मैं भी बड़ा बहादुर महसूस कर रहा था। अगर कहानी यहीं खतम हो जाती तो कितना अच्छा होता। लेकिन खतम हुई नहीं।

सोने का समय हो गया था। मैं और पिताजी अन्दर जाकर लेट गए। करीब पन्द्रह लोग दालान में ही सो रहे थे। थोड़ी देर में आँख लगी तो मैं चौक पड़ा। देखा उस चाँदनी रात में मैं बगीचे के जामुन के पेड़ के पास खड़ा हूँ। उस पेड़ के तने से एक काली छाया धीमे-धीमे सरकती हुई नीचे आ रही थी। सब कुछ सहमा-सहमा सा लग रहा था। बिना चले ही वह छाया मेरी तरफ बढ़ती जा रही थी। अचानक मैंने देखा उस छाया में एक आकृति उभर आई – बड़ी मूँछों वाली, हाथी के दाँत वाली, काली-काली। और फिर लाल-लाल आँखों से उसने मुझे घूरा और तेज़ी-से मेरी तरफ दौड़ी।

डर से मेरी नींद खुल गई। लेकिन मैं तो हिल-डुल भी नहीं पा रहा था। आवाज़ देकर पिताजी को जगाने की कोशिश करना चाही तो मुँह से आवाज़ ही न निकली। तभी मैंने देखा कि पिताजी उठ बैठे। उन्होंने मुझे उठाने की कोशिश की। मेरी तो घिग्घी बँधी थी। जब उन्होंने कई बार पुकारा तो मैंने आँख खोली। थोड़ी हिम्मत हुई तो उठा। पिताजी को मैंने सपने के बारे में बताया। वे थोड़े परेशान-से दिखे। मुझे साथ लेकर वे दालान में आए। वहाँ सारे लोग एक-दूसरे से चिपटकर, गठरी-से बने हुए सो रहे थे। पिताजी ने आवाज़ दी तो कोई उठने का नाम न ले। थोड़ी रोशनी करने के बाद खदेरन चाचा उठे तो सारे लोग उठ पड़े। यह पूछने पर कि वे क्यों आँख मींचे सोने का बहाना कर रहे थे वे एक-एक कर अपना सपना बताने लगे। पिताजी ने और बाकी सब लोगों ने एक ही सपना देखा था। वही लाल-लाल आँखों वाला, बड़े-बड़े दाँत वाला भूत सबके सपने में आया था। पिताजी ने सबको ढाढस बँधाया। ये कहा गया कि चार दल बनाकर लोग लालटेन और टॉर्च लेकर चार दिशाओं में जाकर खोज करें। खदेरन चाचा और ननकू चाचा ने बाहर निकलने से मना कर दिया। वे बस 'जय हनुमान चालीसा, जय हनुमान चालीसा' दोहराए जा रहे थे। बाकी लोग चारों तरफ घूमकर आ गए। कहीं कुछ भी नज़र नहीं आया। कहानी यहाँ भी खतम नहीं होती। लेकिन अगला हिस्सा तो तुम लिखोगे।

हवा चली जब मस्ती में

श्रवण कुमार सेठ
चित्र: वसुन्धरा अरोड़ा

हवा चली जब मस्ती में
आँधी आई बस्ती में
घास-फूस के छप्पर सारे
गगन में उड़ने लगे बेचारे
लहर नदी से उठ के आई
घुसी किनारे कश्ती में
हवा चली जब मस्ती में।

अन्तर ढूँढ़ो

ये दोनों चित्र एक जैसे दिखते हैं, पर इनमें कुछ अन्तर हैं। क्या तुम उन्हें ढूँढ़ सकते हो?

कोमल गोस्वामी
चित्र: तविशा सिंह

एक छींक

लॉकडाउन लग चुका था। खिचड़ीपुर में पिछले एक हफ्ते से पानी न आने के कारण घर में पानी की कमी भी थी। पानी न पीने की वजह से अनामिका का गला सूख रहा था। उसने अपने छोटे-से कमरे में स्टूल पर बैठकर अपना मास्क उतारा। राहत की साँस भरने के लिए उसने मुँह खोला ही था कि अचानक उसे नाक में झनझनाहट-सी महसूस हुई और ‘आ... छीं’ की आवाज़ के साथ उसने मुँह बन्द कर लिया। वह हैरान होकर सबकी तरफ देखने लगी।

छींकने की आवाज़ सुनकर टीवी देख रहे सभी लोगों का ध्यान उसकी तरफ गया। खाना खाने के लिए उसके पापा ने अभी मास्क उतारकर कोने में पड़े गद्दों पर रखा ही था कि छींक की आवाज़ सुन तुरन्त उसे लपककर उठाया और मुँह पर चढ़ा लिया। हड़बड़ी में उन्हें ध्यान भी नहीं रहा कि वह उल्टा मास्क लगा बैठे हैं। उसकी मम्मी भी अपने दुपट्टे से नाक और मुँह ढँक चुकी थीं। दीवार से अपनी पीठ टिकाकर वह

सभी ने एक मुँह से उसे दिलासा तो दी थी। पर सभी के चेहरे के भाव बिलकुल अलग-अलग थे। इस तरह के बर्ताव को देख अनामिका समझ नहीं पा रही थी कि क्या सच में यह सब उसके छींकने की वजह से हो रहा है। अगर हाँ, तो वह तो मामूली-सी छींक थी।

बोलीं, "अरे अनामिका! कुछ नहीं हुआ है। मामूली-सी छींक आई है। तुम ऐसा करो बाहर रखे टब के पानी से हाथ धो आओ।"

अनामिका बिना कुछ बोले हाथ धोने चली गई। अन्दर आकर उसने पायदान में पैर पोंछते हुए पापा की तरफ देखा। पापा सैनिटाइज़र की बोतल लिए उस स्टूल को सैनिटाइज़ कर रहे थे जिस पर अनामिका बैठी थी। अनामिका के आते ही उन्होंने बोतल बेड के नीचे सरका दी। ऐसा लगा जैसे कि अनामिका ने उनकी चोरी पकड़ ली हो। अनामिका भी समझ रही थी कि पापा यह इसलिए कर रहे हैं ताकि उसे पता न चल सके कि उसके छींकने से उन सबके मन में कहीं न कहीं एक डर बैठ गया है। स्टूल पर बिछे कपड़े को मम्मी हाथ में पन्नी लगाकर उठा रही थीं। उन्होंने उसे बाहर लबालब भरे पानी के टब में सर्फ डालकर कुछ देर के लिए छोड़ दिया।

अनामिका के छोटे भाई सूजल ने पटिए से नया कपड़ा निकाला और स्टूल पर बिछा दिया। मम्मी ने अनामिका की तरफ देखा और मास्क के अन्दर से ही दबी आवाज़ में कहा, "हाथ धो आई! और साबुन को धोकर वहीं पर छोड़ दिया है ना?" उसने दोनों सवालों का जवाब 'हाँ' में सिर हिलाते हुए दिया। तभी पापा ने सूजल से कहा, "बेटा, वो पानी की बोतल पकड़ाना।" अनामिका उस बोतल के ज़्यादा पास थी। इस वजह से उसने बोतल उठाकर पकड़ा दी। पर पापा ने

तालाबन्दी में बचपन

अपना हाथ खींच लिया और मयूर जग से ही पानी पीने लगे। यह सब देख सूजल के मुँह से हँसी छूट गई। फिर पापा भी हँसने लगे। उन्हें देख मम्मी भी अपनी हँसी नहीं रोक सकीं। सभी अनामिका को देखकर हँसने लगे।

इस तरह के बर्ताव को देख अनामिका ने गुस्से में झटके से अपने हाथ की बोतल को बिना कुछ बोले ही छोड़ दिया। उसका गुस्सा उसके चेहरे पर नज़र आ रहा था। वह गुस्से में स्टूल की सफाई करने लगी। लेकिन स्टूल का सन्तुलन गड़बड़ा जाने की वजह से वह स्टूल के साथ ही गिर पड़ी। बाकी लोग पीछे हटने लगे। लेकिन गलती से सूजल के पैर पर अनामिका का हाथ पड़ गया और वह ये बात जानती थी। सूजल उठ खड़ा हुआ और बाहर जाकर अपने हाथ-पैर भी धो आया, साथ ही मुँह भी। अन्दर आते ही वह बोला, “यहाँ कितनी गर्मी पड़ रही है!”

अनामिका खुद ही धीरे-धीरे उठने की कोशिश कर रही थी। मम्मी का मन तो था कि वह जाकर उसे सहारा दें। और इधर अनामिका भी सोच रही थी कि कब मम्मी आकर उसे सहलाएगीं। लेकिन दोनों ही खिचड़ीपुर के साथ-साथ पूरी दुनिया में फैले कोरोना के खौफ की वजह से एक-दूसरे से दूर रहे। वह उठकर गद्दों से लगी दीवार के सहारे बैठ गई।

अभी तक जो कुछ भी हुआ था, वह उस पर गौर करने लगी। सभी ने एक मुँह से उसे दिलासा तो दी थी। पर सभी के चेहरे के भाव बिलकुल अलग-अलग थे। अनामिका समझ नहीं पा रही थी कि क्या सच में यह सब उसके छींकने की वजह से हो रहा है। अगर हाँ, तो वह तो मामूली-सी छींक थी।

“मुझे सच में कोरोना थोड़े ही हुआ है। क्या पता? हो भी सकता है...।” उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था क्योंकि इससे पहले घर के लोगों में ऐसा डर उसने कभी महसूस नहीं किया था। यह सब सोचते हुए उसका गला रूँधने लगा और आँखें भर आईं – एक मामूली छींक ने उसे सबसे अलग और अकेले कर दिया था।

कोमल गोस्वामी, सर्वोदय कन्या विद्यालय, जे. जे. कॉलोनी, खिचड़ीपुर, दिल्ली में नौवीं कक्षा की छात्रा हैं। वह पिछले तीन सालों से अंकुर से जुड़ी हैं। कोमल को सुनना-सुनाना और लिखना पसन्द है।

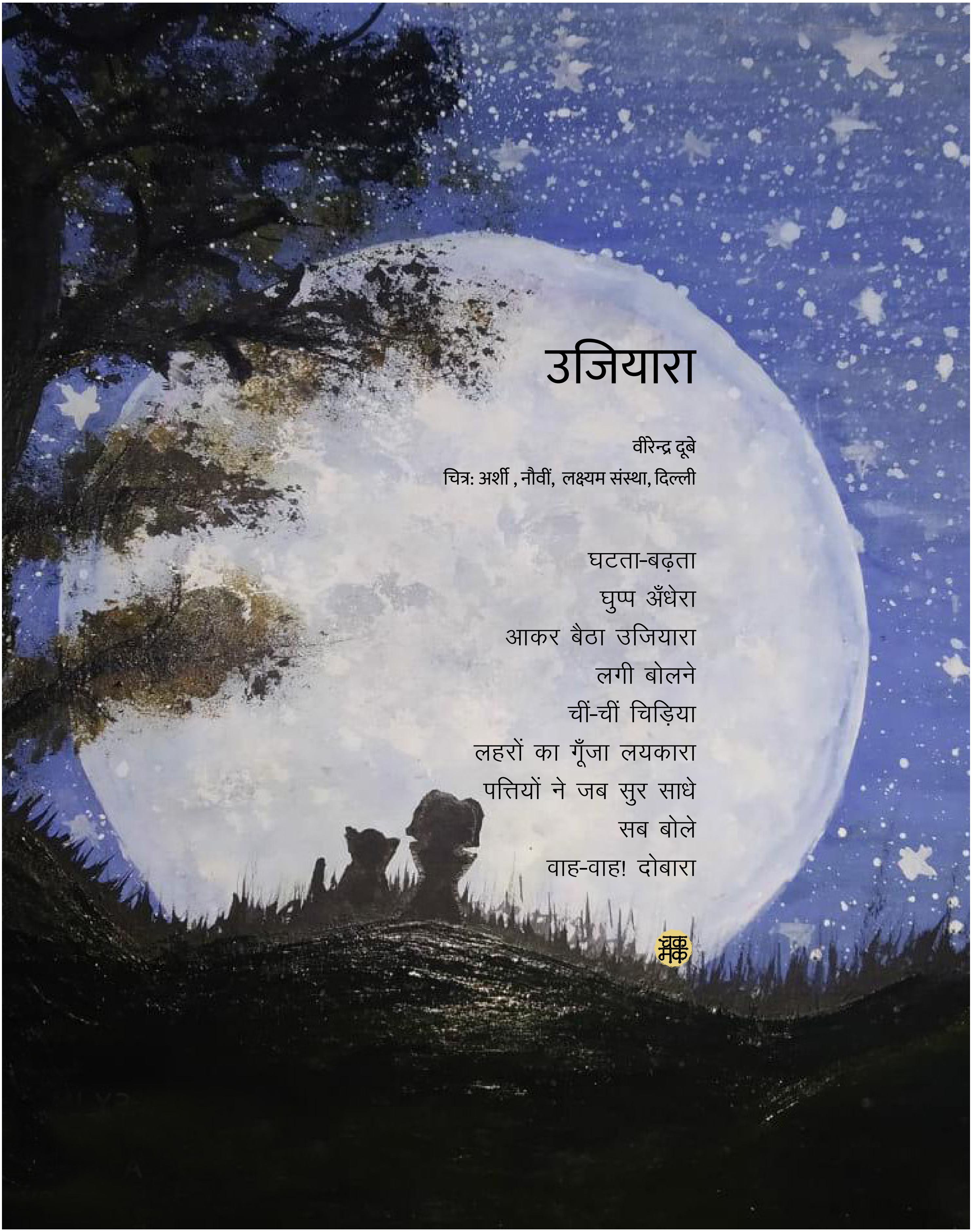

उजियारा

वीरेन्द्र दूबे
चित्र: अर्शी , नौवीं, लक्ष्यम संस्था, दिल्ली

घटता-बढ़ता
घुप्प अँधेरा
आकर बैठा उजियारा
लगी बोलने
चीं-चीं चिड़िया
लहरों का गूँजा लयकारा
पत्तियों ने जब सुर साधे
सब बोले
वाह-वाह! दोबारा

अकेला जूता

शुभम नेगी
चित्र: शुभम लखेरा

उसका जोड़ीदार कहीं गुम गया था। एक दिन उसने सोचा शहर में कोई तो जूता होगा, जिससे वह दोस्ती कर पाए। उसने अपने फीते बाँधे और निकल पड़ा।

शहर के सभी जूते जोड़ी में थे। वह मायूस होने लगा। तभी उसे एक कबाड़ी के झोले से जूते के फीते लटके दिखे। वह तेज़ी-से उसके पीछे हो लिया।

एक ट्रैफिक सिग्नल पर जूता कबाड़ी के काफी नज़दीक पहुँच गया। कबाड़ी दूसरी तरफ जाने लगा।

जूता बाल-बाल बचता, गुलाटियाँ खाता सिग्नल पार कर गया। उसने इधर-उधर देखा। कबाड़ी का कोई अता-पता नहीं था।

जब वह शहर के बाहर पहुँचा तो देखा अनगिनत जूते-चप्पल हँस-खिलखिला रहे थे।

पर वहाँ भी सभी जोड़ी में थे। उसने वहाँ से निकलने की सोची। वह घूमा तो उसे ज़ोर का ठहाका सुनाई दिया।

बड़े झुण्ड से थोड़ी दूर खूब हँसी-मज़ाक चल रहा था। कुछ समय पहले मन्दिर के द्वार पर हल्की भगदड़ मची थी। उसी के बारे में बातें हो रही थीं।

उस महफिल में कोई भी जोड़ी में नहीं था। जूता भी वहीं बैठ गया। अकेला जूता अब अकेला नहीं था।

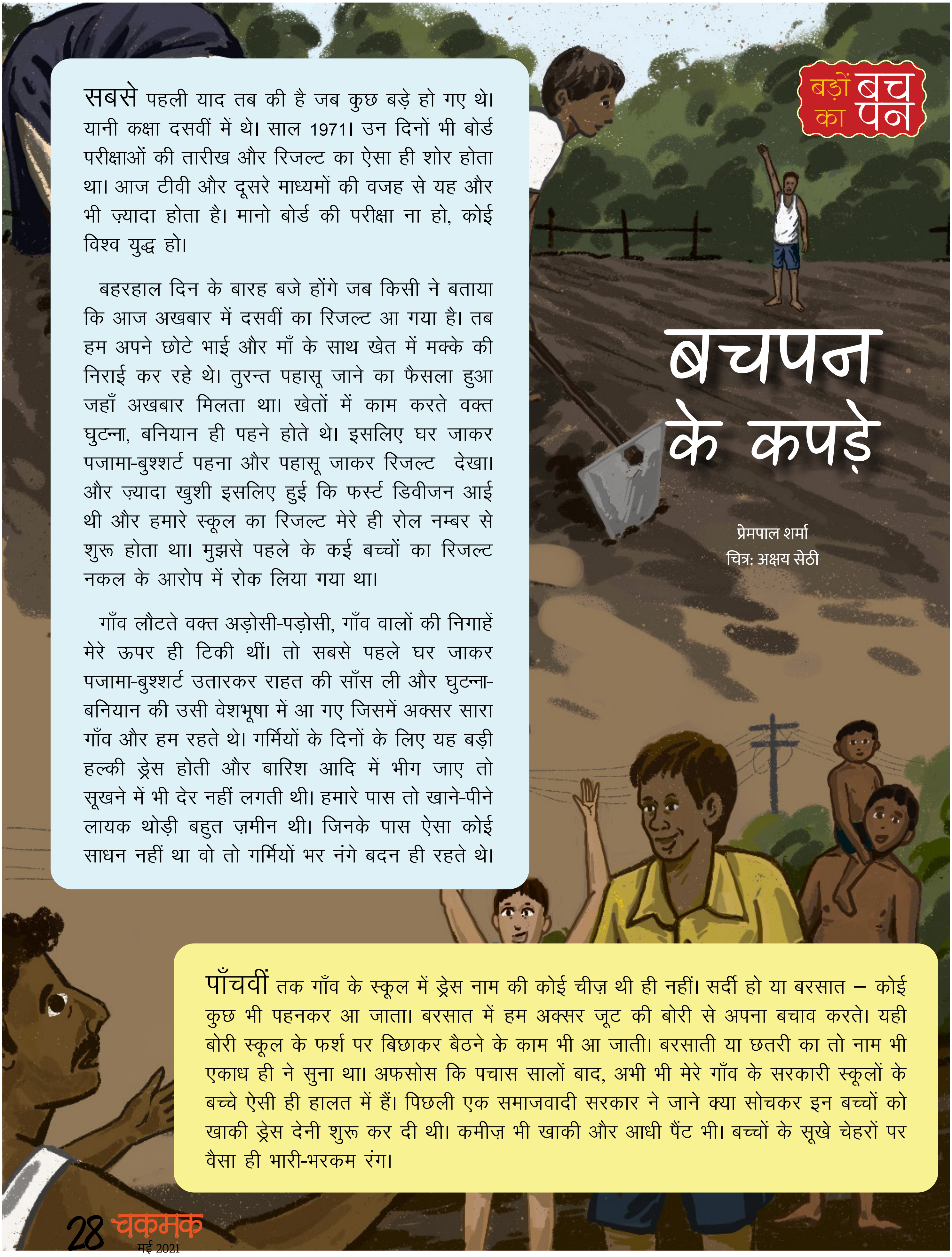

बड़ों का बचपन

बचपन के कपड़े

प्रेमपाल शर्मा

चित्र: अक्षय सेठी

सबसे पहली याद तब की है जब कुछ बड़े हो गए थे। यानी कक्षा दसवीं में थे। साल 1971। उन दिनों भी बोर्ड परीक्षाओं की तारीख और रिजल्ट का ऐसा ही शोर होता था। आज टीवी और दूसरे माध्यमों की वजह से यह और भी ज़्यादा होता है। मानो बोर्ड की परीक्षा ना हो, कोई विश्व युद्ध हो।

बहरहाल दिन के बारह बजे होंगे जब किसी ने बताया कि आज अखबार में दसवीं का रिजल्ट आ गया है। तब हम अपने छोटे भाई और माँ के साथ खेत में मक्के की निराई कर रहे थे। तुरन्त पहासू जाने का फैसला हुआ जहाँ अखबार मिलता था। खेतों में काम करते वक्त घुटन्ना, बनियान ही पहने होते थे। इसलिए घर जाकर पजामा-बुश्शर्ट पहना और पहासू जाकर रिजल्ट देखा। और ज़्यादा खुशी इसलिए हुई कि फर्स्ट डिवीजन आई थी और हमारे स्कूल का रिजल्ट मेरे ही रोल नम्बर से शुरू होता था। मुझसे पहले के कई बच्चों का रिजल्ट नकल के आरोप में रोक लिया गया था।

गाँव लौटते वक्त अड़ोसी-पड़ोसी, गाँव वालों की निगाहें मेरे ऊपर ही टिकी थीं। तो सबसे पहले घर जाकर पजामा-बुश्शर्ट उतारकर राहत की साँस ली और घुटन्ना-बनियान की उसी वेशभूषा में आ गए जिसमें अक्सर सारा गाँव और हम रहते थे। गर्मियों के दिनों के लिए यह बड़ी हल्की ड्रेस होती और बारिश आदि में भीग जाए तो सूखने में भी देर नहीं लगती थी। हमारे पास तो खाने-पीने लायक थोड़ी बहुत ज़मीन थी। जिनके पास ऐसा कोई साधन नहीं था वो तो गर्मियों भर नंगे बदन ही रहते थे।

पाँचवीं तक गाँव के स्कूल में ड्रेस नाम की कोई चीज़ थी ही नहीं। सर्दी हो या बरसात – कोई कुछ भी पहनकर आ जाता। बरसात में हम अक्सर जूट की बोरी से अपना बचाव करते। यही बोरी स्कूल के फर्श पर बिछाकर बैठने के काम भी आ जाती। बरसाती या छतरी का तो नाम भी एकाध ही ने सुना था। अफसोस कि पचास सालों बाद, अभी भी मेरे गाँव के सरकारी स्कूलों के बच्चे ऐसी ही हालत में हैं। पिछली एक समाजवादी सरकार ने जाने क्या सोचकर इन बच्चों को खाकी ड्रेस देनी शुरू कर दी थी। कमीज़ भी खाकी और आधी पैंट भी। बच्चों के सूखे चेहरों पर वैसा ही भारी-भरकम रंग।

छठवीं में आने के बाद स्कूल की ड्रेस नीली कमीज़ और खाकी पैंट हो गई। वैसे कोई बच्चा कुछ और पहनकर आ जाता तो भी स्कूल की तरफ से कोई मनाही नहीं थी। दो कमीज़ तो तब मुश्किल से ही होती थीं। बारिश के दिनों में कई बार गीले कपड़े पहनकर ही निकल जाते। स्कूल पहुँचने तक वे सूख जाते थे। वैसे भी आए दिन बारिश में भीगना, सूखना बहुत रोज़ाना की सी बात थी।

नौवीं कक्षा में एनसीसी में शामिल होने का लालच कपड़ों की वजह से भी था क्योंकि हर कैडेट को खाकी पैंट और कमीज़ की दो ड्रेस मिलती थीं। वह बहुत मज़बूत कपड़ा होता था जो बड़े भाइयों से उतरकर छोटे भाइयों के पास भी कई बरस रहता था। एनसीसी के जूते भी याद आते हैं। उससे पहले तो स्कूल जाने के लिए ज़्यादातर हवाई चप्पल ही होती थी। एक बार हमारे पड़ोस के एक बच्चे को चमड़े के जूते मिल गए थे। उसे देखकर हमने भी रोना-धोना शुरू कर दिया। इसलिए शायद सातवीं क्लास में किसी सस्ती दुकान से हमारे लिए चमड़े के जूते लाए गए। उन जूतों ने पैरों में घाव कर दिए। चमड़े को मुलायम करने के लिए सरसों का तेल भी डाला गया। लेकिन फिर भी वे ठीक नहीं हुए।

हमारे महल्ले के एक बड़े भाई साहब को सेना में नौकरी मिल गई थी। वे जब आते तो कई तरह के गर्म कपड़े, जूते, जर्सी लेकर आते जिसे उनके छोटे भाई-बहन पहनते थे। हम उन्हें देखकर ललचाते थे। उन दिनों मेरा भी सपना जल्दी से जल्दी सेना में भर्ती होने का था। दसवीं करने के बाद सेना में भर्ती होने के लिए मुझे दिल्ली भेजा गया। लेकिन वज़न कम होने की वजह से मुझे नहीं चुना गया। गाँव लौटकर आया तो खूब डाँट पड़ी कि 4 केले खाकर पानी पी लेता तो क्या चला जाता! ये तो बाबरो ही रहेगा!

नए कपड़े तो तभी बनते जब घर या रिश्तेदारी में किसी शादी-विवाह में जाना होता। नए पजामे, नेकर की खुशी में हम कैसे इतराते थे। शादी समारोह खतम होने के बाद उसे तह करके सुरक्षित बक्से में रख दिया जाता था। क्योंकि रोज़-रोज़ पहनने से वह खराब हो जाता और इतनी जल्दी नए कपड़े सिलाने का तो सवाल ही नहीं पैदा होता था।

अक्सर दीवाली से पहले जब सर्दी दरवाज़े पर दस्तक देने लगती है, तब एक मोटा कपड़ा घर में आता। माँ उसे मलेशिया कपड़ा कहतीं। उसे लेने माँ खास तौर से पहासू की हाट जातीं। उससे सर्दी से भी बच जाते और वह चलता भी दो-चार साल था। बड़े-छोटे भाई एक-दूसरे के स्वेटर (जिसे हम 'शूटर' कहते थे) में फिट होते रहते। ये स्वेटर ज़्यादातर बहन, बुआ या माँ के हाथ से बुने हुए होते। उन दिनों यह आरोप भी खूब लगता कि जो महिलाएँ सरकारी स्कूलों में शिक्षक हैं वे पढ़ाने की बजाए स्वेटर बुनती रहती हैं। हालाँकि मेरा मानना है कि पुरुषों के मुकाबले वह अपने समय का बेहतर इस्तेमाल करती थीं। जबकि पुरुष अध्यापक पढ़ाते भी शायद कम होंगे और गप्प ज़्यादा मारते थे।

बीएससी में कॉलेज पहुँचने की तैयारी में कपड़ों को लेकर ज़रूर पहली बार असन्तोष हुआ। शहर में कुछ बच्चे एक से एक अच्छी शर्ट-पैंट पहनकर आते थे। बात पिताजी तक भी पहुँची जो दिल्ली में एक प्राइवेट प्रिंटिंग प्रेस में मशीन मैन थे। दिल्ली जैसे महानगरों में पुरानी पैंट-शर्ट की कई सड़कछाप हाट होती हैं। पिताजी वहाँ से ले तो आए लेकिन तब तक मेरी अकड़ इतनी हो चुकी थी कि किसी की उतरन क्यों पहने?

इसके पीछे एक सामाजिक तिरस्कार भी था। जब एक बार मैं किसी और का ऐसा ही कोट पहने हुए था तो महल्ले के बच्चों ने महीनों तक खिल्ली उड़ाई। नतीजतन सर्दी के बावजूद भी मैंने वह कोट कभी नहीं पहना। पिताजी दिल्ली से इतने प्यार और अरमान से कपड़े लाए थे लेकिन मैं नहीं माना, तो नहीं माना। महल्ले के बच्चों के हँसी उड़ाने का डर घर की गरीबी से ज़्यादा था। कॉम्पलेक्स के चलते गरीबी में अवांछित गरूर कई बार और ज़्यादा जड़ जमा लेता है।

मैं और मेरे बड़े भाई शायद दस-बारह बरस के होंगे। दिल्ली में बुआ की बेटी की शादी थी। दिल्ली तो पहुँच गए, लेकिन शादी में पहनने के कपड़े तो थे ही नहीं। उसी दिन शाम को शादी से पहले पिताजी साइकिल पर बिठाकर पुरानी दिल्ली के एक इलाके की किसी दुकान पर ले गए। शादी से घण्टे भर पहले हम दोनों भाई काले रंग की पैंट-शर्ट में चमचमा रहे थे। शादी एक धर्मशाला में थी। पिताजी शादी के दूसरे कामों में मगन हो गए और हम इधर-उधर घूम रहे थे। लेकिन पता नहीं हमारी सूरत या सीरत पर ऐसा क्या लिखा था कि धर्मशाला के गेट पर बैठा चौकीदार हमें अन्दर ही नहीं घुसने देता था। उसे लगता था कि हम इस शादी में जबरन आने की कोशिश कर रहे हैं। शायद हमें पड़ोस की झुग्गी के बच्चे समझ रहा हो। बहुत देर के बाद घर का कोई आदमी हमें अन्दर ले गया।

मैं यह सब बातें गरीबी की व्यथा-कथा सुनाने के लिए नहीं कह रहा। उस समय लगभग पूरा देश ऐसे ही सीमित साधनों में जीता था। बताते हैं कि लाल बहादुर शास्त्री जी के पास भी एक ही कोट था। आज के मापदण्डों से तुम इसे गरीबी कह सकते हो। लेकिन तब आम इन्सान और अमीर के बीच वैसी खाई नहीं थी जैसी आज देखने को मिलती है। भले ही आजकल लोग “खूब खरीदो, खूब खाओ, खूब उजाड़ो” के सिद्धान्त की वकालत करें। लेकिन मुझे लगता है कि ऐसा करना सामाजिक असन्तोष तो बढ़ाता ही है, कहीं ना कहीं पर्यावरण को भी नुकसान पहुँचाता है।

मेरा पन्ना

चित्र: हार्दिक पोरवाल, सीनियर केजी, किड्ज़ी स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र

लहसुन-प्याज़ का गोलमाल

अनन्या अस्थाना
6 ब, सेंट फ्रांसिस स्कूल
गोमती नगर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

चित्र: असिंला क्रोंग
नौवीं, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, सुपलियांग
अरुणाचल प्रदेश

एक दिन मैं अपने दोस्तों के साथ लंच कर रही थी। मैं उस दिन लहसुन-प्याज़ से बनी सब्ज़ी लेकर आई थी। जब मेरे दोस्तों को पता चला तो वे मुझसे कहने लगे कि क्या तुम्हें मालूम नहीं कि स्कूल में लहसुन-प्याज़ वाला खाना लाना मना है। उनकी बातों पर मुझे विश्वास नहीं हुआ।

वे कहने लगे कि यदि हमारी बात पर विश्वास नहीं है तो टीचर से पूछ लो। मैं झिझकते हुए अपनी मैम के पास गई और पूछा, “मैम! क्या स्कूल में लहसुन-प्याज़ वाला खाना लाना मना है?” यह सुनकर पहले तो वे चौंकीं। फिर मामला समझकर हँसने लगीं।

फिर उन्होंने बताया कि ऐसा कुछ नहीं है, तुम्हारे दोस्त मिलकर तुम्हारी चुटकी ले रहे हैं। मैं जब क्लास में वापिस आई तो सभी दोस्त ठहाके मारकर हँस रहे थे। पहले तो मैं झुँझला उठी। फिर उनके ठहाकों में मेरे ठहाके भी शामिल हो गए।

एक कुत्ता

जसकरन सिंह दुग्गल, साढ़े छह वर्ष,
भोपाल, मध्य प्रदेश

एक दिन एक कुत्ता सड़क पर घूम रहा था। तभी उसे एक घर के सामने दूध का पैकेट पड़ा दिखाई दिया। कुत्ता पैकेट लेकर पार्क की तरफ गया। पार्क चारों तरफ से बन्द था। दरवाज़े पर भी ताला लगा था। तभी एक गिलहरी पेड़ से कूदकर पार्क में गई। गिलहरी को देखकर कुत्ते को भी आइडिया आया। कुत्ता एक लम्बी छलाँग मारकर पार्क के अन्दर चला गया। पार्क के अन्दर धूप बहुत तेज़ थी। तो कुत्ता एक पेड़ के नीचे बैठ गया। पेड़ की छाँव में बैठकर कुत्ते ने दूध के पैकेट में छोटा-सा छेद किया। वो छेद से आराम से ठण्डा दूध पीने लगा। जब पैकेट में दूध थोड़ा कम हो गया तो कुत्ते ने पैकेट को फाड़कर बचा हुआ दूध पी लिया। फिर कुत्ता आराम से छाँव में सो गया।

यात्रा

तमन्ना
चौथी, एसडीएमसी स्कूल
हौज खास, दिल्ली

आज मम्मी ने बोला कि हम अपने गाँव जाएँगे। मद्रास। फिर हमने जल्दी-जल्दी सारा सामान पैक किया। और ट्रेन में बैठ गए। हमने घर का बना खाना खाया और अन्ताक्षरी खेली। नदी, पेड़-पौधे, झरना, फूल और बहुत सारे पहाड़ देखते हुए हम खुश हुए। फिर हम अपने गाँव मद्रास पहुँच गए।

चित्र: पलाश सोनी, चौथी, शारदा विद्या मन्दिर, भोपाल, मध्य प्रदेश

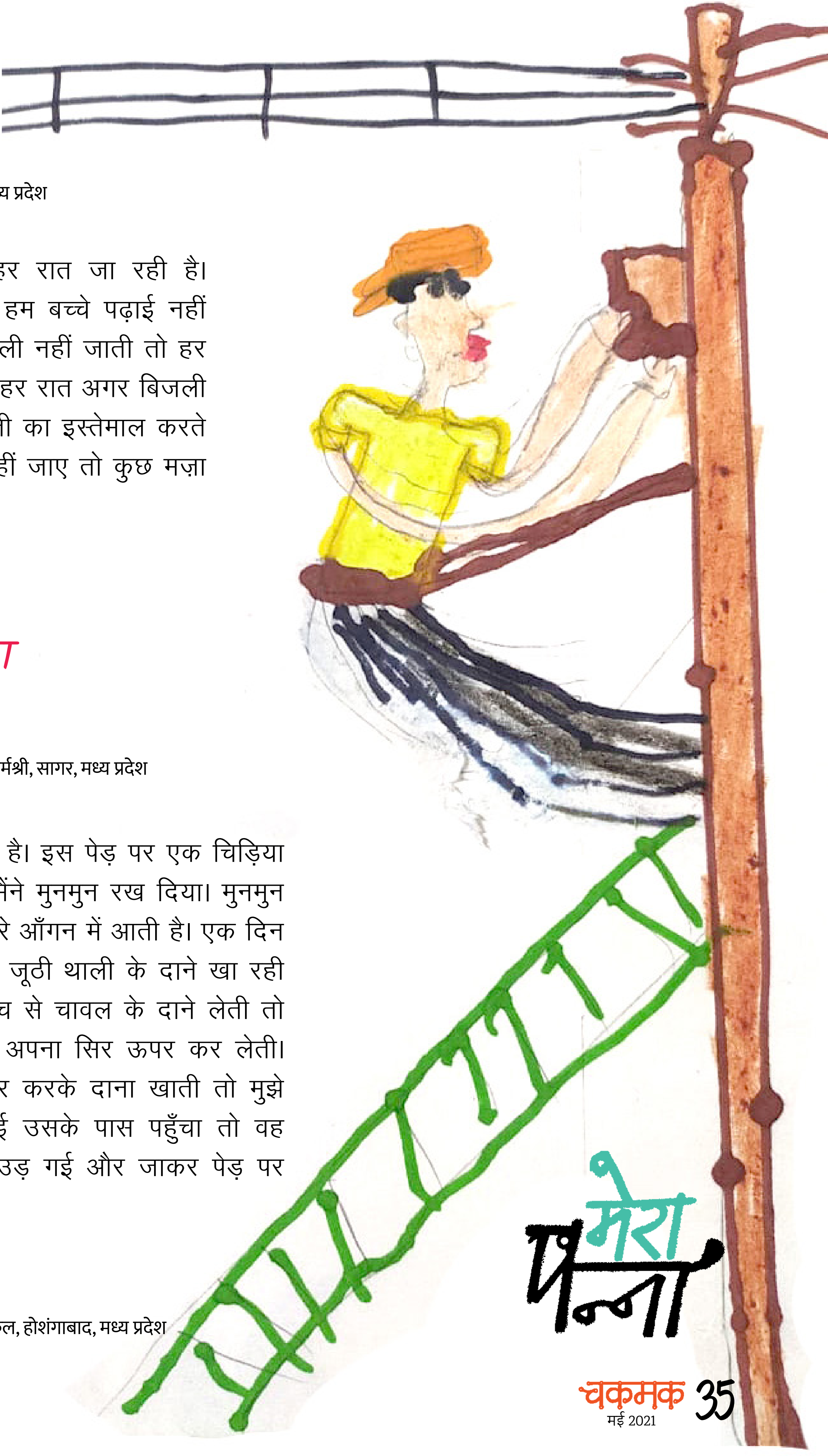

खबर

सुरभि बज (जैन), छठवीं, देवास, मध्य प्रदेश

आज कल बिजली हर रात जा रही है। उसके कारण हर रात हम बच्चे पढ़ाई नहीं कर पाते हैं। अगर बिजली नहीं जाती तो हर काम आसान हो जाता। हर रात अगर बिजली जाती है तो हम मोमबत्ती का इस्तेमाल करते हैं। पर अगर बिजली नहीं जाए तो कुछ मज़ा नहीं आता है।

मुनमुन चिड़िया

रिया अहिरवार
तीसरी, शासकीय प्राथमिक शाला, धर्मश्री, सागर, मध्य प्रदेश

मेरे आँगन में एक पेड़ है। इस पेड़ पर एक चिड़िया रहती है। उसका नाम मैंने मुनमुन रख दिया। मुनमुन चिड़िया चीं-चीं करके मेरे आँगन में आती है। एक दिन वह आँगन में रखी मेरी जूठी थाली के दाने खा रही थी। जब वह अपनी चोंच से चावल के दाने लेती तो सिर नीचे करती। फिर अपना सिर ऊपर कर लेती। जब वह ऊपर-नीचे सिर करके दाना खाती तो मुझे अच्छी लगती। मेरा भाई उसके पास पहुँचा तो वह चीं-चीं करके फुर-फुर उड़ गई और जाकर पेड़ पर बैठ गई।

चित्र: मानवी मुले, दूसरी, सैमिर्टन स्कूल, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश

चित्र: भार्गवी कदम, आठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

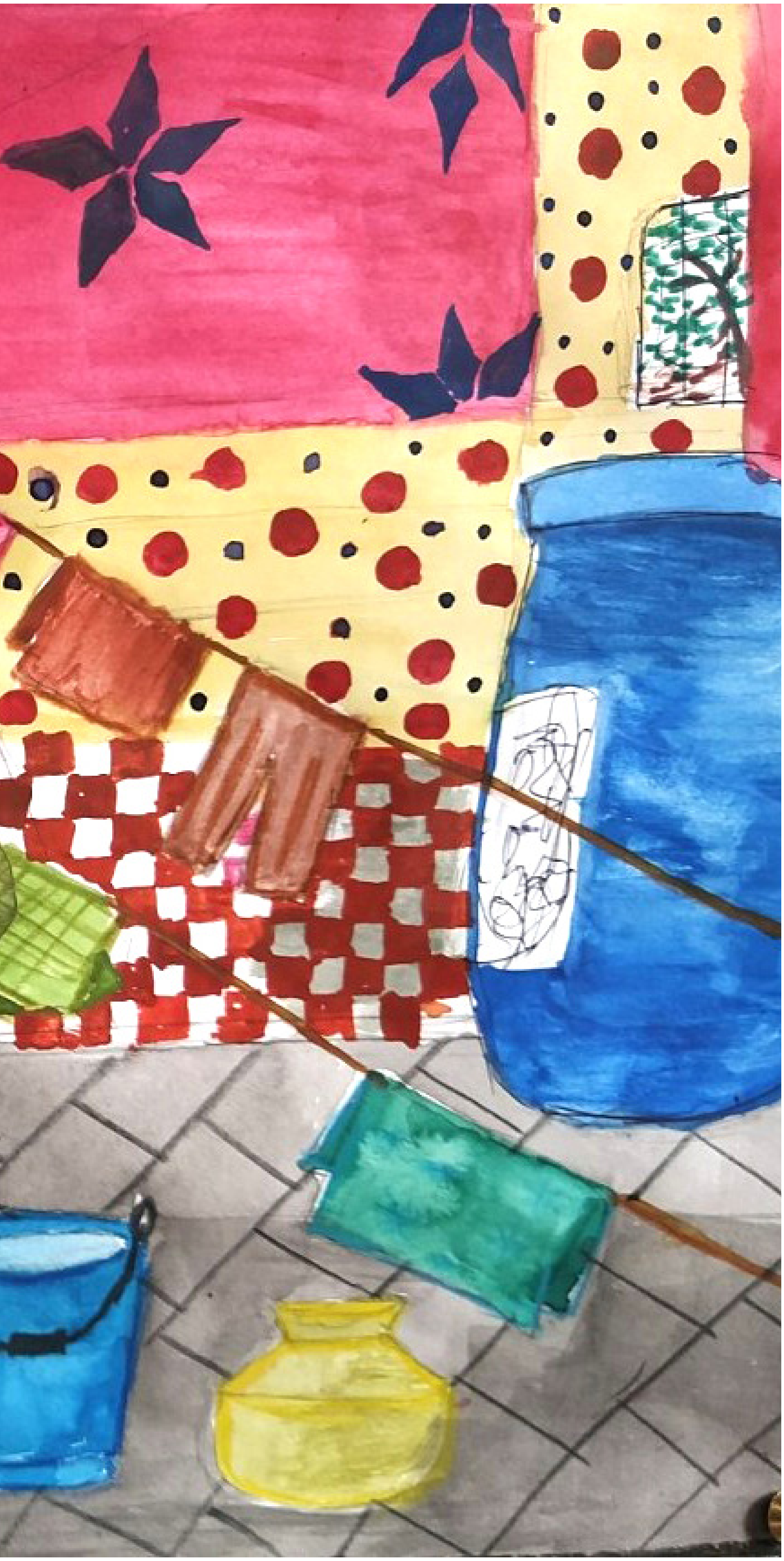

स्कूल की लापरवाही

सन्तुष्टि बावस्कर, नौवीं, केन्द्रीय विद्यालय, देवास, मध्य प्रदेश

मैं देवास में रहती हूँ। लॉकडाउन के बाद पहली बार मेरा स्कूल शुरू हुआ था। मैं रोज़ बड़ी खुशी से स्कूल जाती थी। कुछ दिनों बाद देवास के एक स्कूल में छह बच्चे और कुछ शिक्षक कोरोना पॉज़िटिव निकले। क्योंकि वहाँ पर ना तो मास्क और ना ही सैनिटाइज़र की सुरक्षा थी। उस स्कूल की वजह से हमारे स्कूल भी बन्द हो गए। हमारे स्कूल में सभी चीज़ों की सुरक्षा है लेकिन उस स्कूल की लापरवाही की वजह से हमारा स्कूल भी बन्द हो गया।

जादुई फूलों का बगीचा

सहिती, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

फूलों का एक बगीचा था। माली बगीचे का अच्छे-से ध्यान रखता था। बगीचे में तरह-तरह के रंग-बिरंगे फूल थे। वो माली से बातें भी करते थे। माली रोज़ सुबह फूलों की माला बनाता था। यही उसका एकमात्र सहारा था। एक दिन फूलों ने कहा, "माली तुम कितने अच्छे हो।" कुछ दिनों बाद गर्मी आई और फूल मुरझा गए।

माथापच्ची

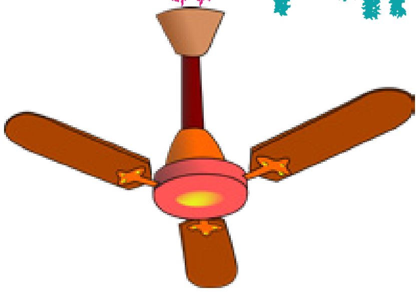

1. तुम्हारे सर के ऊपर पंखा घूम रहा है। तुम्हें माचिस की तीली जलानी है लेकिन ध्यान रहे कि तीली पूरी जलनी चाहिए और पंखा भी घूमते रहना चाहिए। कैसे कर सकते हैं?

ची	क	ट	ह	द	पी	जा
आं	च	ने	रू	प	नी	मु
व	ना	म	र	ग	ल	न
ला	अ	शो	क	ह	गि	ल
क	ना	म	नी	ल	रि	ह
ड़	रि	र	बू	मा	ला	ड़
गु	ला	ब	प	ला	क	गु

2. दी गई ग्रिड में कुछ पेड़ों के नाम छुपे हुए हैं, उन्हें खोजो।

3. जसमीत का घर दसवीं मंज़िल पर है। वह अपने कमरे की खिड़की का शीशा साफ कर रहा था कि अचानक उसका पैर फिसल गया और वो नीचे ज़मीन पर गिर पड़ा। पर उसे बिलकुल भी चोट नहीं आई और वह फिर से खड़ा होकर शीशा साफ करने लगा। यह कैसे हो सकता है?

4. नीचे दी गई खाली जगह में तुम्हें दो अक्षर का एक ऐसा शब्द लिखना है जिसे आगे वाले और पीछे वाले दोनों शब्दों में जोड़ने पर नया सार्थक शब्द बने। जैसे- बा (दल) दल

पो (..........) ब

सर (............) वां

शै (...........) पुरा

ज (...........) र

गुड़ (.........) वाई

5. एक इंटरव्यू के दौरान इंटरव्यू लेने वाले ने अर्शी से कहा कि ये मेरा आखिरी सवाल है। और उसने अर्शी को किसी भी तरह का माप लिए बिना अपने सामने रखी मेज़ का केन्द्र बताने को कहा। बता सकते हो कि अर्शी ने ऐसा क्या जवाब दिया होगा कि गलत जवाब के बाद भी उसे चुन लिया गया?

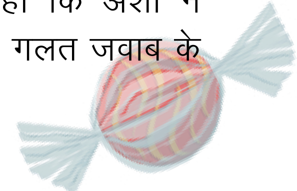

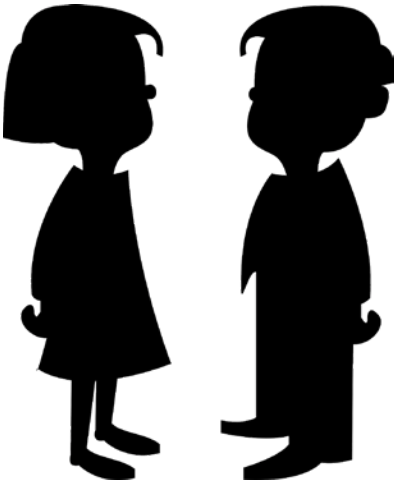

6. इरा और राशिद शाम के 4 बजे आमने-सामने खड़े होकर बात कर रहे हैं। यदि इरा की परछाईं उसके दाईं तरफ है तो राशिद का मुँह किस दिशा में होगा?

7. प्रश्न वाली जगह में कौन-सी संख्या आएगी?

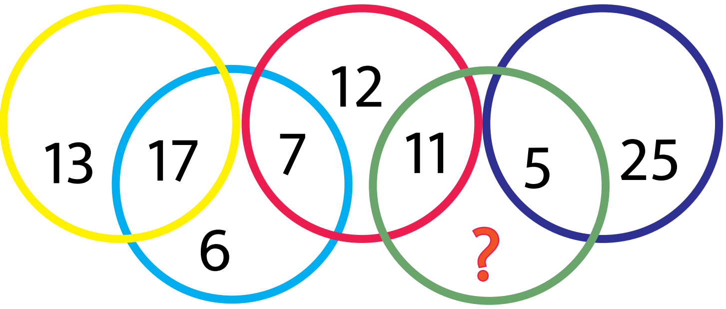

8. नीचे दिए गए टुकड़ों को जोड़कर **T** की आकृति कैसे बना सकते हैं?

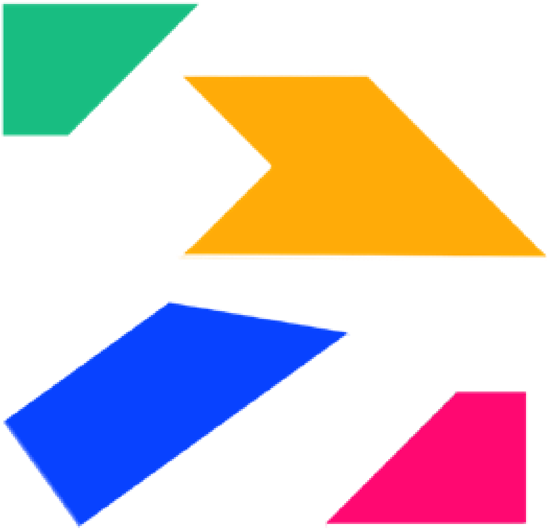

9. ढाई किलो आम 120 रुपए के हैं। जसमीत ने आधा किलो आम लिए और फल वाले को 100 का नोट दिया। फल वाला उसे कितने रुपए वापिस करेगा?

फटाफट बताओ

ऐसा क्या है जिसे हम देख सकते हैं
लेकिन छू नहीं सकते?

(सपना)

क्या है जिसे सभी लोग दिन भर में कई
बार उठाते-रखते हैं?

(पैर)

कुर्सी पर बैठी एक रानी
सर पर आग बदन में पानी

(मोमबत्ती)

हरी-हरी कोठी, उजली-उजली धरती
लाल-लाल बिस्तर पर, काली मछलियाँ सोतीं।

(तरबूज)

काला घोड़ा, सफेद सवारी
एक उतरे तो दूसरे की बारी।

(तवा और रोटी)

ना देखे, ना बोले
फिर भी, भेद खोले।

(चिट्ठी)

10. एक गली में 5-5 फुट की दूरी पर 10 खम्बे लगे हैं। पहले और आखिरी खम्बे के बीच की दूरी कितनी होगी?

● बाएँ से दाएँ
● ऊपर से नीचे

चित्र पहेली

सुडोकू 42

3		9	8	6	5			
							3	
	6	4						9
	5							
	1	3	4		2			
7		2	3	8	6		5	1
	8	7			1		2	5
2		2				8	1	
		1	2	3	8	9	7	

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

माथा पच्ची जवाब

1. पंखे का बटन बन्द कर दो। बन्द करने के बाद भी पंखा थोड़ी देर घूमता ही है। इस तरह तीली भी पूरी जल जाएगी और पंखा भी घूमता रहेगा।

2.

ची	क	ट	ह	द	पी	जा
आं	च	ने	रु	प	नी	मु
ब	ना	म	र	ग	ल	न
ला	अ	शो	क	ह	गि	ल
क	ना	म	नी	ल	रि	ह
ड़	रि	र	बू	मा	ला	ड़
गु	ला	ब	प	ला	क	गु

3. क्योंकि वह कमरे के अन्दर की तरफ से खिड़की का शीशा साफ कर रहा था।

4.
पो (खर) ब
सर (कार) वां
शै (तान) पुरा
ज (वान) र
गुड़ (हल) वाई

5. अर्शी ने अन्दाज़े से मेज़ का केन्द्र बताया। जब इंटरव्यू लेने वाले ने पूछा कि तुम इतने यकीन से कैसे कह सकती हो तो अर्शी ने कहा कि आपने तो कहा था कि वो आपका आखिरी सवाल है।

6. दक्षिण दिशा में।

7.

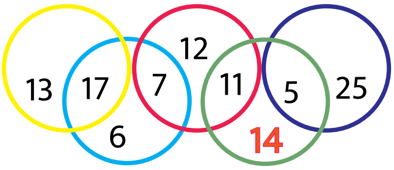

किसी भी एक गोले के अन्दर लिखी सभी संख्याओं का जोड़ 30 है। जैसे, पीले गोले में 13+17 = 30, लाल गोले में 7+12+11 = 30.... इस हिसाब से हरे गोले में प्रश्न वाली जगह पर संख्या 14 आएगी।

8.

9. ढाई किलो यानी 2 1/2 आम की कीमत = 120 रुपए
ढाई किलो में 5 आधा किलो हैं
तो, आधा किलो आम की कीमत = 120/5
= 24 रुपए
जसमीत ने आधा (1/2) किलो आम लेकर 100 का नोट दिया
तो 100 - 24 = 76 रुपए वापिस होंगे।

10. 10 खम्बों के बीच 5 फीट की दूरी के 9 अन्तराल होंगे। इसलिए पहले और आखिरी खम्बे के बीच की दूरी होगी 9 x 5 = 45 फुट।

मार्च की चित्रपहेली का जवाब

	1 खि	ड़	2 की		3 को	ब	4 रा	
	लौ		5 ट	5 ख	ना		7 व	क्त
8 चि	ना	र		ड़ं		9 क	ण	
रं			10 बा	जा		ल्प		11 ब
12 जी	13 वा	श्म			14 अ	ना	ना	स
	य		15 गु	ले	ल			न्ता
	16 लि	17 फा	फा		18 मा	लि	19 श	
20 बो	न	ट		21 पू	री		22 री	ढ़
झा		23 क	रे	ला		24 शे	र	

सुडोकू-41 का जवाब

1	2	6	8	7	4	3	5	9
3	9	7	6	5	1	4	8	2
4	5	8	9	2	3	6	7	1
2	4	9	7	6	8	1	3	5
6	3	5	4	1	9	7	2	8
8	7	1	2	3	5	9	4	6
7	6	3	1	8	2	5	9	4
9	1	2	5	4	7	8	6	3
5	8	4	3	9	6	2	1	7

कालूराम शर्मा... थोड़ा और रुकते

सुशील जोशी

चकमक के लेखक और एकलव्य के पुराने साथी के आर शर्मा का निधन कुछ दिन पहले हुआ। के आर को हम सब बहुत याद करेंगे।

10 अप्रैल 2021 के दिन हम सबके मित्र कालूराम शर्मा थोड़ा हड़बड़ी में चल बसे।

वैसे तो कालूराम (कुछ लोग उन्हें केआर कहना पसन्द करते थे) ने एक छोटे शहर में प्राणी विज्ञान में पढ़ाई की थी लेकिन दृष्टि बहुत व्यापक पाई थी। पढ़ाई पूरी करने के बाद वे अपने गुरु डॉ. भरत पूरे की प्रेरणा से एकलव्य संस्था से जुड़ गए। एकलव्य के होशंगाबाद विज्ञान कार्यक्रम के विकास में योगदान किया। साथ ही साथ विज्ञान से सम्बन्धित विषयों पर लिखते भी रहे। एकलव्य की पत्रिकाओं में भी और आम पत्र-पत्रिकाओं में भी।

कालूराम का लेखन मुख्य रूप से जीव जगत के छोटे-छोटे अवलोकनों को जीव विज्ञान की अवधारणाओं से जोड़ने पर केन्द्रित रहा। पक्षियों, कीटों, साँपों वगैरह के निहायत सामान्य अवलोकनों से शुरू करके कालूराम जीव विज्ञान की बातें सरलता से प्रस्तुत कर देते थे। इन लेखों में जीव विज्ञान तो होता ही था, सामाजिक मुद्दों की बातें भी होती थीं। पर्यावरण की बातों को ठोस अनुभवों से जोड़ना उनके लेखन की विशेषता थी। इन लेखों में समाज में प्रचलित धारणाओं की जाँच-पड़ताल भी होती थी। जैसे हाल ही में कालूराम ने एक लेख इस विषय पर लिखा था कि क्या गायें साँस में ऑक्सीजन लेकर ऑक्सीजन ही छोड़ती हैं। यह बात कुछ तबकों में बहुत लोकप्रिय है। कालूराम ने इसे लेकर अत्यन्त सुन्दर प्रयोग भी किए और इस बेतुकी बात को जीव विज्ञान की अवधारणाओं की कसौटी पर भी परखा। ऐसे कई लेख हैं, जहाँ कालूराम ने अपनी लेखन शैली से विषय को जीवन्त बनाया है। हम सबको अभी बहुत कुछ और होने की उम्मीद थी। खैर, क्या किया जा सकता है।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

शार्क और कोविड

रोहन चक्रवर्ती

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन